TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर | सोमवार | 28 अगस्त 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2 | अंक :26 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

डबल इंजन की सरकार का हाथ, प्रदेश की जनता के साथ : योगी

शाहजहांपुर में मुख्यमंत्री ने बाढ़ग्रस्त इलाकों का किया दौरा, बांटी राहत सामग्री

लोक पहल

शाहजहांपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शाहजहांपुर में बाढ़ग्रस्त मिर्जापुर और कलान क्षेत्र का हवाई दौरा किया। इसके बाद उन्होंने मिर्जापुर के शिवमंगल सिंह डिग्री कॉलेज में बाढ़ प्रभावित लोगों को राहत सामग्री का वितरण किया। उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि डबल इंजन की सरकार आपदा के समय आपके साथ खड़ी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पीड़ितों की हरसंभव मदद का प्रयास किया जा रहा है। हर पीड़ित को राहत सामग्री में १ किलो चावल, आटा, आलू, दाल आदि दे रहे हैं। एंटी स्नेक वैक्सीन भी हर सीएचसी पर उपलब्ध करा दी गई है। पशुओं के चारे का इंतजाम भी किया गया है। जिला प्रशासन से आपदा राहत के मुआवजे की धनराशि देने के निर्देश दिए हैं। मकान गिरने पर नया मकान पीएम और सीएम आवास योजना के जरिये दिया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 11 बाढ़ पीड़ितों को किट देकर राहत सामग्री वितरित की शुरुआत की। इसके बाद कार्यक्रम में 372 बाढ़ पीड़ितों को किट दी गईं। मुख्यमंत्री ने कहा प्रदेश के 21 जिलों के 719 गांव प्रभावित हैं। दूसरे चरण में शाहजहांपुर, फर्रुखाबाद आदि जिले प्रभावित हैं। आपदा के समय मे लोगों को आश्वत करने आए हैं कि डबल इंजन की सरकार उनके साथ में है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि राहत किट में सभी जरूरी सामान वितरित कर रहे हैं। पीड़ितों को सांप के काटने के इंजेक्शन से लेकर पशुओं के लिए चारा सब उपलब्ध करा रहे हैं। आपदा राहत कोष से जन व पशु हानि पर तत्काल धनराशि दे रहे हैं। अधिकारियों को निर्देश दिए हैं जिनका मकान गिरा उन्हें प्रधानमंत्री आवास बनवाकर दें।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा फसल का नुकसान बाढ़ में ज्यादा हुआ है। इसलिए तत्काल सर्वे कराकर मदद दें। सिंचाई विभाग को ठोस कदम उठाने, राहत सामग्री वितरण के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि जलालाबाद में कोलाघाट पर नए पुल के जल्द निर्माण के आदेश दिए हैं। इससे पहले उन्होंने बाढ़ प्रभावित क्षेत्र का हवाई सर्वे भी किया। कार्यक्रम का संचालन कवि डा. इंदु अजनबी ने किया।

इस मौके पर वित्त मंत्री सुरेश खन्ना, जिले के प्रभारी मंत्री नरेन्द्र कश्यप, अरूण सागर, जिला पंचायत अध्यक्ष ममता यादव, विधायक सलोना कुशवाहा, चेतराम, डीपीएस राठौर, जिलाध्यक्ष केसी मिश्रा, महापौर अर्चना वर्मा, एमएलसी सुधीर गुप्ता, मण्डलायुक्त सौम्या अग्रवाल, पुलिस महानिरीक्षक डा राकेश सिंह, जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह, पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा सहित बड़ी संख्या में भाजपा नेता व अधिकारी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री के कार्यक्रम में बड़ी चूक
कूलर में लगी आग, मची अफरातफरी

शाहजहांपुर। शाहजहांपुर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कार्यक्रम में उस समय अफरा-तफरी मच गई जब मीडिया गैलरी में लगा कूलर धूं-धूं करके जल उठा। आनन-फानन में फायर ब्रिगेड बुलाकर कूलर में लगी आग को बुझाया गया। मुख्यमंत्री योगी मिर्जापुर में बाढ़ प्रभावित क्षेत्र का निरीक्षण करने और राहत सामग्री बांटने आए थे। शिवमंगल सिंह डिग्री कॉलेज मैदान में आयोजित कार्यक्रम में पंडाल में मंच के नजदीक ही मीडिया गैलरी बनाई गई थी, जहां बड़े-बड़े कूलर रखे गए थे। मुख्यमंत्री के आगमन से पहले मीडिया गैलरी में रखे एक कूलर में शॉर्ट सर्किट की वजह से आग लग गई। धुआं निकलता देख कार्यक्रम स्थल पर अफरातफरी मच गई। पुलिस प्रशासन के अफसर सकते में आ गए। गनीमत रही कि मौके पर मौजूद फायर ब्रिगेड ने तुरंत ही आग पर काबू पा लिया। अन्यथा बड़ी घटना घटित हो सकती थी, क्योंकि पंडाल में लोग बैठे हुए थे।

जहां चंद्रयान ने रखे कदम उस जगह का नाम 'शिव शक्ति'

इसरो वैज्ञानिकों के बीच पीएम मोदी का ऐलान, 23 अगस्त को मनाया जाएगा नेशनल स्पेस डे

बेंगलुरू एजेंसी। चन्द्रयान-3 ने चन्द्रमा पर सफलतापूर्वक अपना काम शुरू कर दिया है। वैज्ञानिकों से लेकर आम जनमानस तक खुषी का माहौल है। इस माहौल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसरो केन्द्र पहुंचकर अभियान से जुड़े वैज्ञानिकों को बधाई दी। चंद्रयान 3 ने इतिहास रचते हुए चांद के दक्षिणी /द्म5ह्वश पर सफलतापूर्वक लैंड किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ग्रीस की यात्रा समाप्त कर वहां से सीधे बेंगलुरू पहुंचे और उन्होंने इसरो के वैज्ञानिकों से मुलाकात की। उस दौरान अपने संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने एक बड़ा ऐलान किया। उन्होंने कहा कि जिस स्थान पर भारत का चंद्रयान लैंड किया है, उस जगह को अब से शिवशक्ति के नाम से जाना जाएगा।

इस बारे में प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि आज मैं एक अलग ही खुशी महसूस कर रहा हूं, ऐसे मौके बहुत कम आते हैं। व्यक्ति के जीवन में कई बार ऐसी घटनाएं घटती हैं कि वो बेसब्री हावी हो जाती है और इस बार मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ है। मैं दक्षिण अफ्रीका में था

लेकिन मेरा मन पूरी तरह से आपके साथ ही लगा हुआ था। पीएम मोदी ने जोर देकर कहा कि इस सफलता के बाद दुनिया का भारत को देखने का नजरिया हमेशा के लिए बदल गया है।

इसके बाद ही प्रधानमंत्री ने बताया कि जहां पर भारत का चंद्रयान लैंड किया है, उस जगह का नाम अब से शिव शक्ति होगा। इसके अलावा जहां तक चंद्रयान 2 गया था, उस स्थान का नाम तिरंगा रख दिया गया है। यानी कि प्रधानमंत्री मोदी ने एक साथ दो जगहों का नामकरण कर दिया है। प्रधानमंत्री मोदी ने एक और बड़ा ऐलान करते हुए कहा कि अब से 23 अगस्त को हर साल नेशनल स्पेस डे मनाया जाएगा। उस दिन को याद करते हुए प्रधानमंत्री खासा भावुक भी नजर आए।

लोकसभा चुनावः अखिलेश के सामने पार्टी व परिवार दोनो को साधने की कड़ी चुनौती

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में प्रमुख विपक्षी पार्टी सपा ने लोकसभा चुनाव की तैयारियां शुरू कर दी है। पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव ने उन लोकसभा सीटों पर अपना ध्यान फोकस किया है जहां पर कहीं न कहीं उनके परिवार से जुड़े हुए लोग चुनाव में ताल ठोंकते आयें है। सपा मुखिया अखिलेश यादव ने लोकसभा चुनाव 2024 के लिए पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक के साथ उन लोकसभा सीटों पर फोकस बढ़ाया है, जिनमें अखिलेश परिवार के सदस्य लड़ते हैं। सपा मुखिया का खास फोकस समाजवादी पार्टी का गढ़ रहे और पिछले चुनाव में कम मार्जिन से हार वाली सीटों पर है। इनके जरिए अखिलेश यादव अपने परिवार के लोगों की नैया पार कराने की जुगत में लग गए है। समाजवादी पार्टी और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव को यह दिखाई दे रहा है कि अगर थोड़ी से मेहनत कर इन सीटों को हासिल किया जा सकता है। सपा प्रमुख के इस्तीफा देने से खाली हुई आजमगढ़ लोकसभा सीट के उपचुनाव में सपा ने पूर्व सांसद धर्मेंद्र यादव को मैदान में उतारा था, लेकिन वे चुनाव हार गए थे। अब धर्मेंद्र को फिर से उनकी पुरानी सीट बदायूं से चुनाव लड़ाने की तैयारी है।

अखिलेश यादव खुद पिछले दिनों बदायूं लोकसभा सीट की समीक्षा बैठक में इसके संकेत दे चुके हैं। फिरोजाबाद लोकसभा सीट से प्रो. रामगोपाल यादव के बेटे अक्षय यादव का चुनाव लड़ना लगभग तय माना जा रहा है। साल 2019 के चुनाव में अक्षय 28 हजार वोटों से शिवपाल यादव के कारण ही चुनाव हार गए थे। शिवपाल यादव उस समय अखिलेश से नाराज चल रहे और उन्होंने इस सीट से अपनी पार्टी प्रगतिशील समाजवादी पार्टी से चुनाव लड़कर 91 हजार से अधिक वोट पाए थे। कन्नौज से सपा मुखिया अखिलेश यादव का चुनाव लड़ना पूर्व में ही तय हो चुका है। सपा प्रमुख ने पिछले चुनाव में यहां से अपनी पत्नी डिंपल को मैदान में उतारा था, किंतु वह 12 हजार वोटों से चुनाव हार गईं थीं। सपा प्रमुख यह भी जानते हैं कि इस सीट पर थोड़ी से मेहनत करने से यह सीट फिर उनके कब्जे में आ सकती है। यही वजह है कि जब भी अखिलेश को मौका मिलता है वे कन्नौज प्रचार के लिए पहुंच जाते हैं। आजमगढ़ से शिवपाल यादव के चुनाव लड़ने के संकेत मिल रहे हैं। शिवपाल लगातार आजमगढ़ व जौनपुर को मजबूत करने में जुटे हुए हैं। मुलायम सिंह के निधन से रिक्त हुई मैनपुरी लोकसभा सीट का उपचुनाव जीतने वाली डिंपल यादव फिर इसी सीट से चुनाव लड़ेंगी। फिलहाल समाजवादी पार्टी और उसके मुखिया अखिलेश यादव लोकसभा चुनाव की तैयारियों में पूरी तरह से जुट गए हैं लेकिन पार्टी और अपने परिवार को साधने के लिए उन्हें कड़ी मशक्कत करनी पड़ रही है।

मंत्री सुरेश खन्ना ने की नगर निगम के कार्यो की समीक्षा

नागरिक सुविधाओं के लिए 169 करोड़ के बजट का प्रस्ताव शासन को प्रेषित

लोक पहल

शाहजहांपुर। नगर निगम कार्यालय में कार्यकारिणी समिति की बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें मंत्री सुरेश कुमार खन्ना, महापौर अर्चना वर्मा, कार्यकारिणी के सदस्यों ने प्रतिभाग किया। इस दौरान नगर निगम के कार्यो स्वच्छता, निर्माण कार्य, सीवर लाइन, स्ट्रीट लाइट, पेयजल आपूर्ति, टैक्स कलेक्षन तथा नगर निगम द्वारा प्रस्तावित कार्य एवं उपलब्धियों की समीक्षा की गई। समीक्षा बैठक में मंत्री सुरेश खन्ना ने सबसे पहले टैक्स विभाग द्वारा किये गये कार्यो के विषय में जानकारी प्राप्त की। मुख्य कर निर्धारण अधिकारी राकेश कुमार सोनकर ने प्रोजेक्टर के माध्यम से कर विभाग द्वारा जन-सुविधा के दृष्टिगत शासन को भेजे गये प्रस्ताव में वन टाइम सैटेलमेंट स्कीम के विषय में बताया गया। जिस पर कार्यकारिणी के समस्त सदस्यों द्वारा सहमति प्रदान की गई। मंत्री सुरेश खन्ना ने जन-सुविधाओं को प्राथमिकता के आधार पर ध्यान रखने के लिए निर्देष दिए। इस दौरान श्री खन्ना ने निर्देष दिए कि सीवर लाइन के कार्य को अति शीघ्र पूर्ण कराया जायें एवं सीवर लाइन हेतु खोदे गए गड्ढो को लेवल व रेस्टोरेशन के कार्य को गुणवत्तापूर्वक कराया

जायें।

इस मौके पर नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने बताया कि अपर नगर आयुक्त की अध्यक्षता में पार्षदगणों के सहयोग से आमजन की समस्याओं के निस्तारण हेतु एक समिति का गठन शीघ्र की कर दिया जायेगा। नगर आयुक्त ने बताया कि नगर निगम की ओर से राज्य वित्त आयोग, 15वें केन्द्रीय वित्त आयोग, उच्चीकृत-सीमा विस्तारित नगरीय निकार्यो में अवस्थापना सुविधाओं का विकास, नगरीय पेयजल योजना, सीवरेज एवं जल निकासी योजना, नगरीय झील-तालाब-पोखर संरक्षण योजना, कान्हा गौशाला एवं बेसहारा पशु आश्रय, शहरी क्षेत्र में अंत्येष्टि स्थल का विकास, सड़क सुधार हेतु व्यवस्था के लिए अनुमानित 169 करोड़ के बजट का प्रस्ताव शासन को भेजा गया है। अंत में महापौर अर्चना वर्मा ने सभी आभार व्यक्त किया। इस दौरान कार्यकारिणी समिति के सदस्यगण, नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा सहित नगर निगम के समस्त विभागाध्क्ष उपस्थित रहें।

शासकीय सेवा और साहित्य साधना को एक साथ अंजाम दे रही हैं शाहजहांपुर की पूर्णिमा बेदार श्रीवास्तव

लखनऊ में उर्दू अकादमी ने किया सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान, उत्तर प्रदेश की ओर से वर्ष 2020- 2021 में संपन्न काव्य प्रतियोगिता के लिए पूर्णिमा बेदार श्रीवास्तव, उप सचिव, उत्तर प्रदेश शासन को चयनित किया गया था। उन्हें यह पुरस्कार उर्दू अकादमी, लखनऊ में आयोजित एक समारोह में संस्थान के अध्यक्ष ने प्रदान किया। पुरस्कार में अंग वस्त्र, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह के अतिरिक्त निर्धारित धनराशि भी प्रदान की गई।

उल्लेखनीय है कि पूर्णिमा बेदार श्रीवास्तव जीएफ कालेज के अंग्रेजी के प्रो. रहे स्व. राजेश्वर सहाय बेदार की सुपुत्री हैं तथा शाहजहांपुर की मूल निवासी हैं। अपने शासकीय कार्य के साथ ही वे सतत् साहित्य सेवा में लगी हैं। विगत वर्ष इनके द्वारा लिखा गया काव्य संग्रह 'यादों जड़ी किताब' नाम से प्रकाशित हुआ जो अतीत की स्मृतियां, वर्तमान के प्रति आश्वासन और भविष्य के स्वप्न संजोता है। वर्तमान में इनका एक कहानी संग्रह एवं एक कविता संग्रह प्रकाशन की दिशा में अग्रसर है। वे विभिन्न काव्य मंचों से संबद्ध हैं एवम सम्मानित हो चुकी हैं।

प्रगतिशील किसान कौशल मिश्रा ने राज्यपाल आनन्दीबेन पटेल से की भेंट

कृषि में किए गए नवाचारों के बारे में दी जानकारी

लोक पहल

शाहजहाँपुर। जनपद के प्रगतिशील किसान कौशल मिश्र ने उत्तर प्रदेश की महामहिम राज्यपाल आनंदीबेन पटेल से राजभवन में मुलाकात कर उन्होंने गन्ने में किये जा रहे नवाचारों पर विस्तृत रूप से जानकारी दी। साथ में उन्होंने अब तक कृषि के क्षेत्र में किए गए कार्यो से संबंधित तैयार की गई बुकलेट भी राज्यपाल को सौंपी। इस अवसर अपने कृषि फार्म पर गन्ने के साथ तैयार हो रही लाल भिंडी और ड्रैगन फरूट की एक-एक टोकरी भी उन्हें भेंट की। इस अवसर पर राज्यपाल को कृषि के क्षेत्र में सुधार हेतु पांच सूत्रीय सुझाव लिखित में दिए। जिनमें महिला समूह, गन्ना शोध संस्थान शाहजहाँपुर से संबंधित सुझाव थे। कौशल मिश्रा ने वार्ता के दौरान राज्यपाल को अपने गंगा नगर स्थित कृषि

फार्म पर आने का आमंत्रण भी दिया। महामहिम राज्यपाल से हूई वार्ता में उन्होंने एक-एक बिंदु को गंभीरता से सुनकर कहा कि इन सुझावो पर नियमानुसार कार्यवाही का आश्वासन दिया। वही राज्यपाल ने बुकलेट का अवलोकन करते हुए 'युवा चले कृषि की ओर' कार्यक्रम की सराहना की। कौशल मिश्रा ने बताया कि उनके द्वारा कृषि के क्षेत्र में कार्यों को जानकर प्रशंसा की और अपने स्टाफ को बुलाकर उन्हें राजभवन में हो रही खेती को दिखाया। उन्होंने अपने स्टाफ में धीरेंद्र मिश्रा को बुलाकर मेरे कृषि फार्म पर जाने का निर्देश देते हुए कहा कि पूरे दिन फार्म पर रहकर प्रत्येक बिंदु का अवलोकन करें और मुझसे जो भी आवश्यकता हो सहयोग के साथ गन्ने के साथ जो भी फसले तैयार हो सकती हैं उन्हें राज भवन के कृषि फार्म पर तैयार करने का प्रयास करें।

तीज महोत्सव में गीत और नृत्य ने बांधा समां

अनुष्का पाठक को तीज क्वीन का खिताब

लोक पहल

शाहजहांपुर। विदुषी ब्राह्मण महिला ग्रुप की ओर से नगर के किटी हाउस में हरियाली तीज का आयोजन किया गया। सभी महिलाओं ने तीज के गीत गाए, प्रेमलता और गीता शुक्ला ने कजरी गीत गाए तथा हाथों पर मेहंदी लगाकर नृत्य भी पेश किया। संस्था की प्रदेश मंत्री अर्चना तिवारी और नगर अध्यक्ष संगीता पाठक ने गेम्स डांस गीत लोक नृत्य प्रस्तुत किए। संध्या अवस्थी ने गायन में प्रथम स्थान हासिल किया। इस दौरान 'तीज क्वीन' का खिताब अनुष्का पाठक को मिला। दूसरे सिान पर रीता व रचना रही। नृत्य में अंजली शुक्ला, सपना पांडे, अंजली पांडे का ग्रुप विजेता रहा। आयोजन में मधु तिवारी, मंजू पाठक, गीता, सपना, शालिनी, तान्या, हिमांगी, कुसुम, बबली, प्रकाश, अनुराधा, अंजू, अंजलि पांडे, सुनीता पांडे, गीतांजलि, संतोष शुक्ला, ममता शुक्ला, अंकित, पूजा भार्गव, बबली, सुधा दीक्षित, अर्चना मिश्रा आदि महिलाएं शामिल रही।

लैंगिक समानता को व्यवहार में अपनाना आवश्यक

लोक पहल

शाहजहांपुर। एसएस कॉलेज के वाणिज्य विभाग में राष्ट्रीय महिला समानता दिवस के अवसर पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर व्यवसायी नर्वदेश्वर कुमार वैश्य ने कहा कि महिलाओं को समान अधिकार दिए बिना देश की अर्थव्यवस्था का तीव्र विकास नहीं हो सकता है। प्रो अनुराग अग्रवाल ने कहा कि भारतीय संस्कृति में नारी को पूज्य माना गया है। हमारे ग्रंथो में कहा गया है कि जिस घर में नारी का सम्मान होता है उसी घर में देवताओं का वास होता है। डॉ कमलेश गौतम ने कहा कि महिला समानता देश के आर्थिक सामाजिक विकास का मजबूत आधार तैयार करती है। डॉ सचिन खन्ना ने कहा कि आधुनिक दौर में महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं। डॉ कविता

भटनागर ने कहा कि महिलाओं को बराबरी का दर्जा दिए बिना कोई समाज विकसित नहीं हो सकता। डॉ विनीता राठौर ने कहा कि बालिका के जन्म के समय से ही उसे लैंगिक समानता का अनुभव होना चाहिए। शोध छात्रा बृजलाली ने कहा कि शैक्षिक पाठ्यक्रमों में लैंगिक समानता के विषय को शामिल किया जाना चाहिए ताकि युवा वर्ग इस विषय पर एक विकसित दृष्टिकोण अपना सके सके। गोष्ठी का संचालन डॉ रूपक श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम के अंत में अखंड प्रताप सिंह ने आभार व्यक्त किया। गोष्ठी में डा गौरव सक्सेना, डा विजय तिवारी, डॉ संतोष प्रताप सिंह, डॉ अजय कुमार वर्मा, यशपाल कश्यप, देव सिंह कुशवाहा तथा अनेक छात्र -छात्राएं उपस्थित रहे।

कार्यशालाओं का आयोजन करेगा क्षत्रिय समाजः पदम सिंह

लोक पहल

शाहजहांपुर। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की एक बैठक जिला कार्यालय पर जिलाध्यक्ष पदम सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक को संबोधित करते हुए पदम सिंह ने कहा कि आज क्षत्रिय समाज को एकता के साथ साथ नई पीढ़ी को परंपरागत संस्कार दिए जाने की आवश्यकता है। इसकी लिए महासभा न्याय पंचायत स्तर से लेकर ब्लाक स्तर पर कार्यशालाओ का आयोजन करेगी। बैठक का संचालन महामंत्री मुनीश सिंह परिहार ने किया। इस मौके पर प्रमुख रूप से पवन कुमार सिंह, ठाकुर ओमकार सिंह (सिंधौली) विजय प्रताप सिंह, निलय सिंह, वीरेंद्र सिंह, महिपाल सिंह चौहान, अमित प्रताप सिंह, उदित प्रताप सिंह, रविन्द्र सिंह, गिरंद सिंह, अजय पाल सिंह बरुआ, राघवेंद्र प्रताप सिंह आदि लोग उपस्थित रहे।

शहर के रंगकर्मी सूरज का चयन फिल्म एंड टेलीविजन संस्थान में हुआ

रंगकर्मियों और गुरु शमीम आजाद ने दी बधाई

लोक पहल

शाहजहांपुर। शहर की नाट्य संस्था अभिव्यक्ति के रंगकर्मी सूरज मिश्रा का चयन भारत के प्रतिष्ठित फिल्म एंड टेलीविजन संस्थान, पुणे, (एफ टीआईआई) में हो गया है जो कि पूरे जनपद के लिए गौरव की बात है। सूरज जनपद के इतिहास में केवल तीसरे व्यक्ति हैं जिसका चयन एफटीआईआई में हुआ है। इससे पूर्व वर्ष 1971 में स्वर्गीय कुलदीप भागी, वर्ष 2012 में अंकुश चक आलम और वर्ष 2023 में सूरज मिश्रा का। सूरज मिश्रा ग्राम सुजानपुर, तह. पुवायां शाहजहांपुर के रहने वाले हैं। पिता सर्वेश मिश्रा और माता रेनू मिश्रा के सुपुत्र सूरज ने कक्षा 1 तक की पढ़ाई गांव के स्कूल आदर्श शिक्षा निकेतन, इंटरमीडिएट की पढ़ाई पुवायां इंटर कॉलेज तथा बी. कॉम की शिक्षा एस एस कॉलेज शाहजहांपुर से की। वर्ष 2017 में वह अभिव्यक्ति से जुड़ गए, वरिष्ठ रंगकर्मी शमीम आजाद के सानिध्य में अपने रंगसफर की शुरुआत की और संस्था

अभिव्यक्ति द्वारा प्रदर्शित नाटकों क्रमशः एक मुलाकात, विरासत, अंधायुग, दारा शिकोह, जरूरत है श्रीमति की, गज फुट इंच, सैय्यां भए कोतवाल, हड़प्पा हाउस, जानेमन, किंग एडीपस, मंत्र, काकोरी एक्शन, नाटकों में अपनी धमाकेदार प्रस्तुति दी। वर्ष 2022 में सूरज का चयन भोपाल के एक्टिंग स्कूल टैगोर नेशनल स्कूल ऑफड्रामा में 2 वर्षीय कोर्स के लिए हुआ और इस वर्ष उन्होंने धमाकेदार एंट्री एफटीआईआई में की है जहां से फिल्म इंडस्ट्री के नामीगिरामी हस्तियों ने पास आउट किया है। वह अपनी सफलता का पूरा श्रेय माता पिता और अपने गुरु शमीम आजाद को देते हैं। उनकी इस शानदार सफलता पर संस्था अभिव्यक्ति से जुड़े सभी पदाधिकारी और रंगकर्मियों क्रमशः शमीम आजाद, कृष्ण कुमार श्रीवास्तव, अरविन्द चोला, परविंदर सिंह, कंवरदीप सिंह, सैफअसलम, सुखवंत सिंह, शालू यादव, उषा सक्सेना, प्रभा मौर्य, नेहा, पुनीत शर्मा, विनोद दौलताबाद, राजेश भारती, ऐनुल हक, रिजवान सिद्दीकी, अंकित त्रिवेदी, अनुराग राठौर, ऋषिकांत, प्रियंका, अंकुर सिंह, अभिशान्त पाठक, शिवम सिंह, हर्षवीर, ओमवीर, अभिषेक, अभय कश्यप, विशु राठौर, रोहित वर्मा, शैलेंद्र कुमार, देव मिश्रा आदि ने शुभकामनाएं दी हैं।

जन-जन के कवि हैं गोस्वामी तुलसीदासः प्रो. आलोक मिश्रा

लोक पहल

शाहजहांपुर। तुलसी जयंती के अवसर पर एसएस कालेज एवं तुलसी संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अवंतीबाई राजकीय महाविद्यालय, बरेली की डॉ. रंजू राठौर ने कहा कि तुलसीदास का जन्मजिन परिस्थितियों में हुआ वे समाज के लिए अनुकूल नहीं थी। एक आदर्श समाज की स्थापना उस समय की मांग थी। इस मांग की पूर्ति हेतु अनेक विद्वान अपने-अपने दृष्टिकोण से कार्य कर रहे थे। ऐसी स्थिति में गोस्वामी तुलसीदास ने जो रामचरितमानस रचा वह समाज को एक नई दिशा प्रदान करने में समर्थ है। एसएस कॉलेज की समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्ष प्रो. पूनम ने कहा कि तुलसी का संपूर्ण साहित्य समाज की संरचना को विविध आयामों से सुसज्जित करता हुआ समन्वय का जैसा प्रयास है।

तुलसी जयंती पर संगोष्ठी का आयोजन

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कला संकाय प्रभारी प्रो. आलोक मिश्रा ने तुलसी को जन-जन का कवि बताया उन्होंने कहा तुलसी जैसा जन कवि विश्व में नहीं है। तुलसी संस्थान के संस्थापक डॉ. श्रीकांत मिश्र ने तुलसी को संपूर्ण मानवता का महाकवि बताते हुए कहा तुलसीदास ने अपनी साहित्यिक संरचना से समाज को तो प्रभावित किया ही साथ ही धर्म की सच्ची व्याख्या भी प्रस्तुत की।

आभार ज्ञापन तुलसी संस्थान के महासचिव अनिल मिश्रा ने व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ राजीव, डॉ. बलवीर, डॉ मानवेन्द्र, डॉ प्रीति सहित महाविद्यालय परिवार के एवं तुलसी संस्थान के अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

भारतवर्ष की गौरवशाली परम्परा पर गर्व करें युवाः डीपीएस राठौर

जलालाबाद के काकोरी शहीद इण्टर कालेज में युवा संवाद कार्यक्रम का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। कलान नेहरू युवा मंडल समिति की ओर से पंच प्रण पर आधारित युवा संवादः भारत-247 पर युवा परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन जलालाबाद के काकोरी शहीद इंटर कॉलेज में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि जिला सहकारी बैंक के चेयरमैन डीपीएस राठौर, मिर्जापुर ब्लॉक प्रमुख प्रियांशु सिंह रघुवंशी, सेवानिवृत्त जिला प्रोबेशन अधिकारी विजय विक्रम सिंह ,जिला युवा अधिकारी मयंक भदौरिया ने स्वामी विवेकानंद व माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि जिला सहकारी बैंक चेयरमैन ने पंच प्रण विकसित भारत का निर्माण, गुलामी की हर सोच से आजादी, विरासत पर गर्व, एकता और एकजुटता और नागरिकों का कर्तव्य पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला और सभी को पंच प्रण शपथ भी दिलाई। विषय प्रवेश करते हुए जिला युवा अधिकारी मयंक भदौरिया ने युवाओं से आग्रह किया कि वे इन्हें चरितार्थ करने के लिये इस ओर निरन्तर प्रयासरत रहें। मुनीष सिंह परिहार ने कहा कि एक जागरूक एवं ऊर्जावान युवा ही एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकता है।

जिला परियोजना अधिकारी (नमामि गंगे) विनय कुमार सक्सेना ने भारत की राष्ट्रीय नदी गंगा को भारत की विरासत बताते हुए एकता के साथ उसका संरक्षण अपना नागरिक कर्तव्य समझे। मेरी माटी मेरा देश, माटी को नमन, वीरों का वंदन विशेष अभियान अंतर्गत पूर्व सैनिक विजय मोहन मिश्रा, राजवीर सिंह सोमवंशी और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पूर्व विधायक केशव सिंह के पौत्र यशोविक्रम सिंह को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में काकोरी शहीद इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य रमाशंकर, अरविंद मिश्रा, महेंद्र यादव, राजेश सिंह चंदेल, आदित्य प्रताप सिंह, राममूर्ति कश्यप, अनामिका शर्मा आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन मुकेश सिंह परिहार ने किया।

पुलिस लाइन में राखी व झण्डा प्रतियोगिता का आयोजन

'वामासारथी' अध्यक्ष भारती मीणा ने प्रतिभागियों को किया पुरस्कृत

लोक पहल

शाहजहांपुर। भारती सिंह मीणा, अध्यक्ष, वामासारथी पुलिस लाइन की ओर से पुलिस लाइन सभागार में राखी व झण्डा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में पुलिस परिवार के बच्चों द्वारा सुन्दर-सुन्दर राखीयां बनाई व झण्डो का चित्रण किया। सीनियर वर्ग झण्डा प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान मो.रेहान, द्वितीय स्थान प्रशान्त यादव व तीसरा स्थान वेदान्त विराज ने प्राप्त किया। जूनियर वर्ग मे प्रथम स्थान असित, द्वितिय स्थान यश प्रताप व तृतीय स्थान तनिष को प्राप्त हुआ। राखी प्रतियोगिता सीनियर वर्ग मे प्रथम स्थान मनीषा यादव, दूसरा स्थान चाँदनी व तीसरा स्थान खुशबू को प्राप्त हुआ ,जूनियर वर्ग मे प्रथम स्थान नेतिका, दूसरे स्थान पर प्रज्ञा व तीसरे स्थान तानिया रही। भारती सिंह मीणा, अध्यक्ष, वामा सारथी द्वारा बच्चो के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुये बच्चो को पुरस्कृत किया गया। इस दौरान, प्रतिसार निरीक्षक सतीश चन्द्र, महिला सहायता प्रकोष्ठ प्रभारी, वन्दना सिंह, रुबी व अन्य कर्मचारीगण मौजूद रहे।

मेडिकल कालेज में कन्या जन्मोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के तहत बालिका के जन्म के प्रति समाज में सकारात्मक सोच को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राजकीय मेडिकल कॉलेज के डॉ नेपाल सिंह की अध्यक्षता में 7 नवजात शिशुओं की माताओं की उपस्थिति में कन्या जन्मोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर नवजात षिषुओं और उनकी माताओं को उपहार भी दिये गये।

प्रभारी महिला कल्याण अधिकारी अम्रता दीक्षित द्वारा महिलाओं को बेटियों के प्रति अच्छी सोच रखने की अपील की गई। उन्होंने मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना का फॉर्म भरने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि बेटा-बेटी में भेदभाव न करें, दोनों को समान शिक्षा दें, जिससे बेटियां भी अपने पैरों पर खड़ा होकर परिवार, समाज एवं देश का नाम रोशन करें। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ भारत सरकार एवं प्रदेश सरकार की महात्वाकांक्षी योजनाओं में से एक है। कन्या जन्मोत्सव का उद्देश्य कन्या भ्रूण हत्या को रोकना है तथा समाज में बालिका के जन्म के प्रति सकारात्मक सोच को बढ़ावा देना है। इस अवसर पर जिला समन्वयक कीर्ति मिश्रा ने महिलाओं की सुरक्षा के दृष्टिगत हेल्पलाइन नम्बर 1090 वूमेन पावर लाइन, 181 महिला हेल्पलाइन, 1076 मुख्यमंत्री हेल्पलाइन, 112 पुलिस आपातकालीन सेवा, 1098 चाइल्ड लाइन, के बारे में भी बताया। इस अवसर पर सी.एम.एस नेपाल सिंह, महिला चिकित्सालय से मैनेजर रईस खान, व अन्य स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित रहे।

चन्द्रयान के चांद पर पहुंचते ही खुशी से झूम उठे छात्र-छात्राएं

शाहजहांपुर (लोक पहल)। सिधौली के प्राथमिक विद्यालय तेरा में चंद्रयान 3 की लैंडिंग का कार्यक्रम छात्रों को दिखाया गया। कार्यक्रम के सफल होने पर विद्यालय भारत माता की जय के नारो से गूंज उठा। चंद्रमा पर भारत ने नया कीर्तिमान स्थापित किया। जिसका लाइव प्रसारण छात्रों को दिखाया गया। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर भारत ने सफल लैंडिंग की। जैसे ही भारत ने यह सफलता पाई छात्र-छात्रा उत्साह से उछल पड़े और भारत माता की जय, हिंदुस्तान जिंदाबाद के नारों से फिज़ाएं गूंजने लगी। सहायक अध्यापक दीपा पूनिया ने चंद्रयान मिशन के विषय में छात्रों को जानकारी दी। इस मौके पर प्रधान अध्यापक सरताज अली, राम नारायण, रामकली, गीता देवी, गुड्डी देवी सहित छात्र छात्राएं मौजूद रहे।

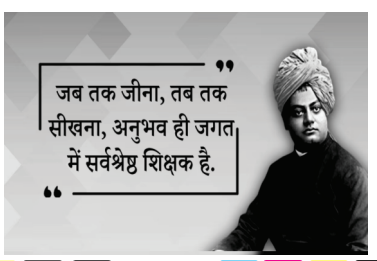

धरोहर

तीर्थ क्षेत्र है चौकसी नाथ और फूलमती मंदिर

सुशील दीक्षित 'विचित्र'

शाहजहांपुर के चौक क्षेत्र में मंदिरों की एक लम्बी श्रृंखला है इसकी एक कड़ी बनखंडी नाथ मंदिर पर और दूसरी कड़ी सीता की मठिया के पास संगत पर खुलती है। इन मंदिरों की विशेषता यह है कि यह लगभग एक ही कालखंड में बने हुए है। यह सभी मंदिर विशाल हैं। इनके प्रांगण बड़े बड़े और गृभगृह भी विस्तृत हैं। मंदिर निजी भूमि पर बने हैं उनकी कमेटियां भी हैं तब भी कुछ मंदिर न केवल उपेक्षा के शिकार हैं, बल्कि कुछ मंदिर वर्षों से बंद हैं। खास बात यह भी है कि सभी मंदिर सड़क पर हैं। चौक क्षेत्र में सड़क किनारे पूरब की ओर जितने ही मंदिर बने हैं वे सब सड़क के कमोवेश आधी से अधिक मंजिल ऊंचाई पर हैं। अलबत्ता मंदिरों का एक समूह चौक क्षेत्र के मंदिरों के पीछे छुपा हुआ है। चौक के सर्राफ़ बाजार से गुजरते हुए आप पायेंगे कि सड़क के पश्चिमी किनारे पर आकाश मिष्ठान भण्डार है। आप इसके पास पीठ करके खड़े होंगे तो आप को एक डाटदार पुराना दरवाजा दिखेगा। दरवाजे से ऊपर की ओर कुछ चौड़ी चूना पत्थर वाली सीढ़ियां है जो उत्तर की ओर गुम हो जाती हैं। आप सीढ़ियों पर खड़े होंगे तो सामने ही एक बहुत विशाल प्रांगड़ वाला मंदिर दिखेगा। आप सीढ़ियों के साथ घूम जाइये तो आप अपने को एक सकरी गली में पायेंगे। मंदिरों की दीवारों के सिलसिले के साथ चलते हुए आप एक प्रांगण में पहुँच जाएंगे। कुछ निजी मकान बने है और इनके साथ ही दो बहुत प्रसिद्ध तीर्थ मंदिर है। इनमें एक मंदिर फूलमती देवी के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। इसके सामने थोड़ा परे एक छोटा मंदिर है। इसमें दो जुड़वां शिवलिंग है। शिवलिंग की उपस्थिति इस क्षेत्र को विशेष बनाती है। इनकी कथा यह प्रमाणित करने के लिए काफी हो सकती है कि मुगलों के आने से पहले यहां कोई विशेष धार्मिक स्थल रहा जो बाद में नष्ट हो गया। मंदिर ढह गए और शिवलिंग अगोचर हो गए। आप इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थति को देखते ही समझ जाएंगे कि कई सदी पहले यहाँ एक टीला रहा होगा और इस विस्तृत टीले पर शिव जी का विशाल मंदिर रहा होगा। यह मोहल्ला आज चौकसी कहा जाता है। सुखलाल चौकसी कन्नौज के निवासी थे और वहां के राजा की कुलदेवी फूलमती के उपासक थे। वे यहाँ मुगल सेना में नौकरी पा गए और उन्हें रहने के लिए यह स्थान दिया गया जो उस समय झाड़झंखारों से भरा टीला था। इसकी सफाई कराते समय एक स्थान पर फावड़ा किसी ठोस चीज से टकराया। तत्काल काम रोक कर वहाँ सफाई कराई गयी तो दो शिव लिंग दिखाई दिए। इसके आसपास दस बारह फिट खुदाई के बाद भी शिवलिंग का अंत नहीं मिला। नीचे अनंत गहराइयों तक गयी एक चट्टान मिली। चौकसी ने वहीं पर एक मंदिर बना दिया जिसे चौकसी नाथ मंदिर के नाम से जाना जाता है। थोड़ा स्थापित होने के बाद सुखलाल चौकसी एक दिन कन्नौज गए। उन्होंने फूलमती मंदिर की एक ईंट निकाल कर अरघे में रखी और अरघे को अपने सिर पर रख कर पैदल ही शाहजहांपुर आये। चौकसी नाथ मंदिर के सामने एक मंदिर बनवा कर उसमें ईंट की प्राण प्रतिष्ठा की। यही मंदिर फूलमती देवी के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बाद में अमावस्या को यहां मेला भी लगने लगा।

राशिद को नवाब गौहर अली खां अवॉर्ड

लोक पहल

शाहजहांपुर। जिले के युवा साहित्यकार व शायर राशिद हुसैन राही जुगनू को फ्तेहपुर में जश्न ए जफ़र इकबाल जफ़र में सेमिनार व मुशायरा के अवसर पर उर्दू साहित्य एवं पत्रकारिता में उल्लेखनीय योगदान के लिए नवाब गौहर अली खां अवार्ड से सम्मानित किया गया।

शहर के मोहल्ला एमनजई जलालनगर में रहने वाले राशिद हुसैन राही को इससे पहले विभिन्न संस्थाओं द्वारा भी अनेक बार सम्मानित किया जा चुका है। उनकी रचनाएं आकाशवाणी लखनऊ, ई टीवी उर्दू, उर्दू मजलिस दिल्ली, दूरदर्शन बरेली से प्रसारित हो चुकी हैं। वह लखनऊ, कानपुर, बुलंदशहर, अमरोहा , बिजनौर, संभल, सीतापुर, गोला आदि स्थानों में आल इंडिया मुशायरों में गीत गजलें सुनाकर वाहवाही बटोर चुके हैं। उनकी बाल कविताएं, कहानियां और कार्टून देश की प्रतिष्ठित बाल पत्र पत्रिकाओं में छप चुकी है।

रामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास की जयंती मनाई

लोक पहल

शाहजहांपुर। सामाजिक सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संस्था जय भारत ने रामचरितमानस महाकाव्य के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास की 526वीं जयंती द मसूरी इंटरनेशनल स्कूल में मनाई। समारोह का शुभारंभ विभिन्न स्कूलों से आए हुए छात्र छात्राओं ने गोस्वामी तुलसीदास के चित्र पर माल्यार्पण पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलित करके किया । इस अवसर पर तुलसीदास के जीवन चरित्र पर आधारित जय भारत तुलसी ज्ञान प्रतियोगिता में नगर के विभिन्न विद्यालयों के 200 से अधिक छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया जय भारत संस्था के अध्यक्ष राजीव कृष्ण अग्रवाल ने रामचरितमानस एवं तुलसीदास जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए कहा रामचरितमानस कि प्रत्येक चौपाई आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी आज से 500 वर्ष पूर्व थी। समारोह में मेजबान कालेज के प्रिंसिपल अमरेंद्र कुमार तिवारी संयोजक आयुष अग्रवाल पूजा अग्रवाल कल्पना गुप्ता रम्मन गुप्ता सतीश शर्मा संदीप शर्मा रामबाबू मिश्रा सहित अनेक अध्यापक अध्यापिकाएं एवं छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

/ सम्पादकीय /

चाँद पर पहुंचा भारत

चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर कदम रखने वाला भारत विश्व का पहला देश बन गया है। चार साल पहले जब चन्द्रयान मिशन असफल हुआ था तो मिशन से जुड़े वैज्ञानिकों के सब्र का बांध टूट गया लेकिन वैज्ञानिकों को एक बार फिर मिशन को कामयाब करने की ठानी और चार साल के अथक परिश्रम के बाद चन्द्रयान-3 को सफलतापूर्वक चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर स्थापित कर दिया। निश्चित रूप से यह भारत और सभी देशवासियों के लिए खेशी की बात है कि चंद्रयान-3 ने चांद की सतह पर उतर कर इतिहास रच दिया है। यों इस बार भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान यानी इसरो ने जैसी तैयारी की थी, उसमें पहले ही यह उम्मीद मजबूत दिख रही थी कि देश का विज्ञान एक नया आसमान छूने जा रहा है, लेकिन चौदह जुलाई के बाद अपनी चालीस दिन की यात्रा पूरी कर चंद्रयान-3 शाम को ठीक जिस पल चांद की सतह पर कामयाबी के साथ उतरा, उस पल ने दुनिया भर में देश का माथा ऊंचा कर दिया।

आज भारत दुनिया का पहला ऐसा देश बन गया है, जिसने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक उतरने में अपना झंडा लहराया। इसके साथ ही एक बार फिर यह साबित हुआ है कि विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में देश के वैज्ञानिकों और खासतौर पर इसरो ने जिस स्तर पर जाकर काम किया है, उसने आज दुनिया भर में भारत को एक बड़ा सम्मान दिलाया है। हालांकि इससे पहले अंतरिक्ष में अन्य तमाम उपलब्धियों के जरिए देश ने सफलता की एक लंबी शृंखला कायम की है, लेकिन चंद्रयान-3 के अभियान को दुनिया भर में जिस तरह देखा जा रहा था, उससे इसकी अहमियत की भी पुष्टि होती है। अब ताजा सफलता के साथ ही अंतरिक्ष कार्यक्रम में भारत को एक नई और बेहतर जगह बनेगी। यह बेवजह नहीं है कि चंद्रयान-3 के चांद के सतह पर उतरने के साथ ही तमाम बड़े देशों और उनके नेताओं की ओर से भारत के लिए विशेष बधाइयां भेजी गईं। यह इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि दुनिया के कई वैसे देश, जो विज्ञान और तकनीक के मामले में दुनिया भर में अग्रणी माने जाते हैं, भारत आज उनके समांतर खड़ा होने और कई मामलों में आगे निकल जाने का सफर तय कर चुका है। यहां यह बताना जरूरी है कि अभी कुछ ही दिन पहले रूस को तब बड़ा झटका लगा था, जब 'लूना-25' चांद की सतह पर पहुंचने के पहले ही तबाह हो गया। जाहिर है, भारत ने इस क्षेत्र में भी अपनी क्षमता साबित है, लेकिन इसका लाभ दुनिया भर को मिलने वाला है।

अंतरिक्ष को जानने-समझने के क्रम में भी हमारा विज्ञान आज नई ऊंचाइयों को हासिल कर सका है और दुनिया एक अंधेरे युग से निकल सकी है। इस क्रम में कई देशों के अभियानों के जरिए अंतरिक्ष के अनंत आकाश के बारे में समझने में मदद मिली है। अब चंद्रयान-3 इसमें नया अध्याय रचने जा रहा है। इसरो की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक, चंद्रयान-3 के लिए मुख्य रूप से तीन उद्देश्य निर्धारित किए गए थे। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर लैंडर की 'साफ्ट लैंडिंग' कराना, चंद्रमा की सतह कही जाने वाली 'रेजोलिथ' पर लैंडर को उतारना और घुमाना, लैंडर और रोवर्स से चंद्रमा की सतह पर शोध कराना। जाहिर है, कामयाबी का पहला चरण शानदार तरीके से पूरा करने के बाद अब चंद्रयान-3 के जरिए चंद्रमा के बारे में जो भी हासिल किया जा सकेगा, वह पूरी दुनिया के लिए उपयोगी होगा। और यह सभी भारतीयों के लिए गर्व करने के पल हैं। इसरो के वैज्ञानिकों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अतिरिक्त विपक्ष के नेताओं ने भी उनकी इस कामयाबी पर उन्हें बधाई दी है। कर्नाटक के मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री ने इसरो के केन्द्र पर पहुंचकर वैज्ञानिकों को सम्मानित किया। कहा जा सकता है कि इसरो की स्थापना करीब 6 दशक पूर्व जिस उद्देश्य को लेकर की गई थी वह उद्देष्य आज पूर्ण होते दिखाई दे रहे है। आने वाले समय में भी इसरो अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में कई बड़े कारनामे करेगा ऐसा सभी भारतवासियों के साथ-साथ विदेशियों का भी मानना है। इसरो के वैज्ञानिकों को उनकी इस बड़ी कामयाबी के लिए बधाई।

बढ़ती उग्रता समाज के लिए हानिकारक

डा. कनक रानी

बहुधा उग्रता के चलते साधारण सी बात में लोग अपना संयम खो देते हैं। फलत: छोटे-छोटे झगड़े भी हिंसा में परिवर्तित हो जाते हैं। सामान्य सी बहस की परिणति गंभीर अपराध के रूप में होती हैं। हतप्रभ करने वाली ऐसी घटना, जब- तब समाचार पत्रों की सुर्खियों में देखी जा सकती हैं। यह व्यवहार मन:स्थिति की बढ़ती उग्रता को संज्ञान में लाता है। उग्र व्यवहार सामंजस्य को तो क्षति पहुंचाता ही है, सामाजिक पर्यावरण की दृष्टि से भी उचित नहीं।

भौतिकता की लालसा, एकल पारिवारिक व्यवस्था, पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण, सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण, तनाव ग्रस्त जीवनशैली आदि के अतिरिक्त सहनशीलता का ह्रास भी उग्रता के मूल में देखा जा सकता है। सामाजिक संबन्धों में कटुता-दूरी-शिथिलता का प्रमुख कारण घटती सहनशीलता है। सहनशीलता अर्थात् सहिष्णुता, तितिक्षा। प्रतिकूलता पर वैचारिक असहमति के बाद भी शांति को प्रमुखता देना सहिष्णुता है। विपरीत परिस्थितियों में सहसा ही तनाव-क्रोध में न आना सहनशीलता है। व्यवहार में बहुत उग्र हो जाना सहनशीलता की हीनता को चिह्नित करता है। परिवार-समाज की स्वस्थता व सकारात्मकता के लिए सहिष्णुता आवश्यक है। इसका अभाव सौहार्द, प्रेम, अपनत्व, बन्धुत्व, सहअस्तित्व में अवरोध उपस्थित करता है। सनातन संस्कृति पारस्परिक मतभेदों-कटुता के विरुद्ध संचेतना प्रसारित करती रही है। सहिष्णुता सामाजिक समरसता के लिए अपरिहार्य है। सम्प्रति सनातन परंपराओं की अवहेलना करते हुए-उग्रता की ओर बढ़ते हुए सामाजिकों की प्रकृति अचंभित करने वाली है। व्यक्ति आवेश में अपराध के दुष्परिणामों को संज्ञान में नहीं ले पाता। यह निर्विवाद तथ्य है कि ऐसी घटना, समाज के स्वरूप को विकृत करती हैं। अवांछित परिणाम जीवन में व्यवधान डालते हैं। परिवार की प्रतिष्ठा धूमिल होती है, भविष्य प्रश्नांकित होता है। यही नहीं, परिवार के सामने भी आकस्मिक पीड़ा को झेलने की विवशता होती है। सहनशीलता की न्यूनता/अभाव जीवन के सौंदर्य को प्रभावित करता है। समाज भी अशांति से अछूता नहीं रहता। साधारण सी बातों पर अप्रत्याशित उग्रता ने प्रबुद्धजनों को चिंता में डाल दिया है। बदलती हुई जीवन शैली में सहनशीलता का घटता स्तर/ उग्रता की ओर बढ़ती मन: स्थिति विमर्श का आग्रह करती है।

अस्तु, श्रेष्ठ व्यक्तित्व के विनिर्माण की दृष्टि से आवश्यक तत्व है- सहनशीलता। यह सौहार्द को विस्तारित करती है। विचारों को सौम्य बनाती है।

आत्मनियंत्रण का परिचय देती है। सहनशीलता एक सद्गुण है। यह निर्बलता नहीं, अपितु आत्मशक्ति है। स्वभावगत विषिष्टता ही नहीं, संस्कार भी है। संस्कृति की उदारता है। परिवार से प्राप्त उदात्तता है। यह सोचने- समझने का अवसर प्रदान करती है। आक्रोश- वैमनस्य- हिंसा आदि से दूरी बनाने के लिए प्रेरित करती है। सहनशीलता अहम् को परास्त कर आपसी संबंधों में सहजता-मृदुता लाती है। जहां सहिष्णुता है, वहीं सौहार्दता- सहगमनीयता- सहवदनीयता- सदाषयता की संस्थिति हो सकती है। उल्लेखनीय है कि जीवन समता और सहिष्णुता के आधार पर प्रषस्त्य बनता है। सहनषीलता को नजरअन्दाज करना समाज के हित में नहीं। वातावरण में अनुकूलता के लिए समाज इस गुण की प्रबल अपेक्षा रखता है। सहिष्णुता जीवन शैली में लचीलेपन को प्राथमिकता देती है। प्रकृति भी शिक्षित करती है कि सहनशक्ति से अरुचिकर स्थितियां में विषम वातावरण में अनुकूलता लाई जा सकती है। घास का तिनका झंझावात में अपने जीवन की रक्षा करने में सफल हो जाता है किंतु कठोरता के कारण बांस टूट कर अपना अस्तित्व ही खो देता है। परिवार/ समाज द्वारा बच्चों को सहिष्णुता के सुप्रभाव से शिक्षित किया जाना वांछित है। असहिष्णुता के प्रभाव में क्रोधादि विकारों का पनपना शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से भी तो सही नहीं। असहिष्णुता के दुष्परिणाम तो कदाचित् किसी के लि, भी सुखकर नहीं। अस्तु, शैक्षणिक संस्थानों का भी यह दायित्व बन जाता है कि शिक्षित के अतिरिक्त सांस्कृतिक गुणों की ओर भी ध्यान दिया जाए। ध्यातव्य है कि सहनशीलता में आदर्श चरित्र गढ़ने की योग्यता है। सोचने की बात तो यह भी है कि जब अन्य लोग भी सहनशीलता का परिचय दे सकते हैं तो तनिक सी बात पर हमारे द्वारा तीव्र प्रतिक्रिया उचित नहीं। हमारे बोल/ व्यवहार अविचारित नहीं होना चाहिए। कटु एवं मृदु अनुभूतियां तो जीवन की स्वाभाविकता है। परिवेश में अनुकूलता/ जीवन में सहजता हेतु सहनशीलता को चरितार्थ करने की अपेक्षा है।

वैश्विक स्तर पर भी सहिष्णुता का क्षरण हो रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य भी प्रभावित हो रहे हैं। प्राय: सोशल मीडिया भी सहिष्णुता की परीक्षा लेती दिखाई देती है। राजनीतिक पृष्ठभूमि के साथ- साथ जातीय-सांप्रदायिक संदर्भों में भी इस वैषिष्ट्य को सहेजना मंगलकारी है। श्रीमद्भगवद्गीता सकल मानवता को सचेत करती है कि- क्रोधात् भवति सम्मोह:। क्रोध व्यक्ति को किंकर्तव्यविमूढ़ बनाता है। प्रतिकूलता में आगबबूला हो जाना सही नहीं। यहां सहनषीलता, स्वानुशासन एवं विवेकशक्ति अपेक्षित है। क्रोध से सतर्क रहते हुए सृजन की ओर गतिमान रहना श्रेयस्कारी है।

आध्यात्मिक ऊर्जा : मोह का बंधन

सूर्यदीप कुशवाहा

मनुष्य जब जन्म लेता है तो वह बंद मुट्ठी लेकर आता है, लेकिन धीर-धीरे जैसे उसका जीवन आगे बढ़ने लगता है, वैसे-वैसे लोभ,मोह व अहंकार जैसे विकार उस पर हावी हो जाते हैं। अंत में वह खाली हाथ संसार को लौटकर वापस चला जाता है।आप अपने बच्चे को छोड़कर घूमने जाते हैं पर फिर हर जगह उसी के बारे में सोचते हैं। उसे ये दिखाते ये खिलाते। ये मोह है। जबकि मोह प्लास्टिक के फूल की तरह है। यह बेहद सुविधाजनक है, लेकिन जब यह आपके जीवन में आता है, तो चिंता और बेचौनी साथ लाता है। पुत्र का मोह, धन का मोह, जमीन जायदाद का यह मोह, कई तरह के दुख का कारण भी बनता है। अगर इन्हें हम वास्तविकता मान लेते हैं तो इनके चक्रव्यूह में हम फंसते चले जाते हैं। ईश्वर ने संसार को रचाया। ये संसार माया है। इसमें छोटी-छोटी भौतिक वस्तुएं, सोना-चांदी बंगला, गाड़ी या रिश्ते-नाते इन सब के पीछे अगर हम भागने हैं तो मोह के चक्रव्यू में फंसते चले जाते हैं। आजकल जिसे लोग प्रेम कहते हैं, वह किसी दूसरे के साथ खुद को बांधने का, खुद की पहचान बनाने का एक तरीका है। लेकिन यह प्रेम नहीं है, यह मोह है, आसक्ति है। हम हमेशा आसक्ति को ही प्रेम समझ बैठते हैं, जबकि सच्चाई यह है कि आसक्ति का प्रेम से कोई लेना-देना नहीं है।इस जगत से आसक्ति जो मनुष्य की सब से बड़ी कमजोरी है और उस की आत्मानुभूति के प्रयास में सब से बड़ी बाधा ही मोह कहलाती है। यह हमें किसी भी वस्तु, प्राणी अथवा विषय से हो सकतीं है। इसे त्यागना ही हमारा सब से पहला कर्तव्य है। मोह आपकी यादें हैं। मोह आपके रिश्ते हैं। मोह एक कड़ी है जो अपनो और सपनो से जोड़े रखती है। मोह एक मृगमारीचिका है जिसमें जीव-जंतु जीवन भर भटकते रहते हैं।

मोह का उद्गम पृथ्वी तत्व है।सकल तमो गुणी प्रवृत्तियाँ पृथ्वी तत्व से उपजी हैं।पृथ्वी तत्व के भारी होने के नाते,इसकी अधो -गति है। इस प्रकार तमोगुणी प्रवृत्तियाँ जीव को उर्ध्वमुखी होने से रोकती हैं। तामसी क्रियाओं युक्त भोग,रोग पैदा

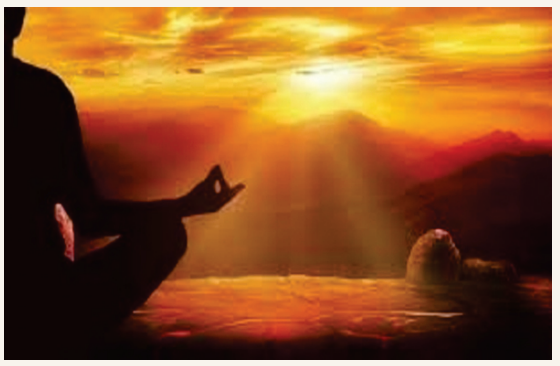

करते हैं, इस प्रकार सकल व्याधियों के मूल में मोह ही है। मोह से छुटकारा मिल जाए तो मुक्ति संभव है। श्रीकृष्ण अर्जुन से पहले मोह छोड़ने की बात करते है। मोह अभाव से होता है। अभाव का अर्थ है व्यक्ति भीतर से खाली है, कहीं न कहीं उसमें रिक्तता है। भीतर के खोखलेपन को भरने के लिए बाहर की वस्तुओं के संग्रह के मोह में पागल हो जाता है। उपनिषद कहता है कि यदि इस संसार में कुछ खोजने के लिए है तो वह है आत्म तत्व, परंतु मोह ऐसा है कि- 'मैं और मेरा में ही खोया रहता है।

जब तक हम स्वयं इस बात को स्वीकार नहीं करेंगे कि मोह का यह मायाजाल हमारी ही अपनी मानसिक रुग्णता का परिणाम है, तब तक हम इससे बाहर नहीं निकल पाएंगे। अत: यदि हम अपना उद्धार चाहते हैं, तो हमें सभी प्रकार की इच्छा-कामनाओं का त्याग कर एक परमात्मा की तरह सभी आत्माओ से निरूस्वार्थ प्रेम करना सीखना होगा, अन्यथा हम मोह रूपी दलदल से कभी भी बहार निकल नहीं पाएंगे। अष्टावक्र गीता में लिखा है- मुक्ति का अभिमानी मुक्त है और बंधन का अभिमानी बंधन में है। हम सोचते हैं कि अभी मैं बंधन में हूं और मुक्ति के लिए प्रयास करूंगा, जबकि भाव पक्का करना है कि मैं मुक्त ही हूं और बंधन में न आऊं, इसके लिए प्रयास करना है। लगातार मुक्ति के भाव में टिके रहने से प्रज्ञा प्रतिष्ठित होने लगती है। यह संसार एक छलावा है लेकिन इस संसार के अनुसार जीना भी जरूरी है। लेकिन वास्तविकता यह भी है कि संसार के माया और मोह को समझना भी चाहिए। ताकि हम सावधान रहें। हमारा जीवन बेहतर बने। किसी से लगाओ रखना अच्छी बात है लेकिन उस लगाओ के चक्रव्यूह में उलझना ठीक नहीं है। अगर वह दुख दे रहा है तो उससे दूरी बना लेना चाहिए। चाहे वह धन ही हो, चाहे वह पुत्र ही हो। याद रखिए हम पानी की धारा को, हवा के बहाव को और सूरज के प्रकाश को अपने मन मुताबिक नहीं बदल सकते हैं। तो हमें कैसा दुख! प्रकृति की हर एक चीज अपने मुताबिक चलती है। हम उस में दखलअंदाजी नहीं कर सकते हैं।

पारिस्थितिक तंत्र और मानव

हन्नान

यहां मेरा सर्वेक्षण वैज्ञानिक मानकों के आधार पर सतही होगा लगभग पूरी तरह से उन महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय वातावरणों की उपेक्षा करेगा जिनमें आधुनिक मनुष्य रहता है और उन क्षेत्रों को छूएगा जिनमें मैं अधिक से अधिक सूचना के सेकेंड हैंड स्रोतों पर निर्भर हूं मैं पारिस्थितिक विज्ञानियों के लिए इस आशा से कम प्रयास करता हूँ कि संदेश अंतत: उन दर्शकों तक पहुंचेगा जो भूल गए हैं या जिन्होंने कभी नहीं सीखा है कि मनुष्य प्रकृति का एक हिस्सा है पृथ्वी का वायुमंडल जलमंडल जीवमंडल और इसके स्थलमंडल की सतही परतें मिलकर एक विशाल पारिस्थितिक मंडल का निर्माण करती हैं जिसके भीतर किसी एक घटक में परिवर्तन अन्य सभी में परिवर्तन उत्पन्न करता है मनुष्य का अस्तित्व अंतत: पारिस्थितिकी तंत्र की कार्यप्रणाली की समझ पर निर्भर करेगा और मैं अपनी अवधारणा प्रस्तुत करता हूं कि ये सभी चीजें अपनी वर्तमान स्थिति में कैसे पहुंचीं और भविष्य में वे कहां जा सकती हैं।

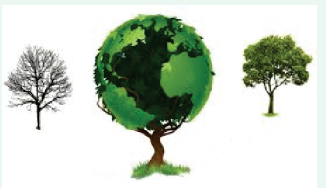

पारिस्थितिक तंत्र और मानव खाद्य श्रृंखला को ध्यान में रखते हुए मानव का पारितंत्र में स्थान देखा जाये तो ज्ञात होता है कि यह प्रथम एवं द्वितीय श्रेणियों का उपभोक्ता है मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति में क्रियाशील अनेक पारिस्थितिक तंत्रों को बहुत अधिक हानि पहुँचाई है धीरे धीरे मनुष्यों द्वारा बहुत से वनों को काटा जा रहा है जिससे न केवल उत्पादक अपितु विभिन्न श्रेणियों के उपभोक्ता भी नष्ट होते जा रहे हैं यही कारण है कि आज अनेक प्रकार के पक्षियों एवं जंतुओं की संख्या बहुत कम हो गई है अब भी प्रकृति में जो जंतु एवं पक्षी बच गए हैं उसका कारण यह है कि उन जीवों का खाद्य जाल काफी विस्तृत है इसके अतिरिक्त मनुष्य ने अपनी ही सुविधाओं के लिए अनेक कारखाने एवं मिलें खोली हैं जिनसे दूषित गैसें एवं अन्य वस्तुएँ निरंतर निकलती रहती हैं जो वातावरण को प्रदूषित करती हैं कारखानों के अपशिष्ट पदार्थ नदियों में गिराए जाते हैं जिससे जलीय पारिस्थितिक तंत्र को बहुत हानि पहुँचती है लकड़ी एवं अन्य कार्यों के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई हो रही है इसके जलग्रहण क्षेत्रों तथा मैदानों में बाढ़ का प्रकोप बढ़ गया है इसके कारण अनेक वन्य प्राणी एवं दुर्लभ पौधे नष्ट होते जा रहे हैं और वनों की खाद्य श्रृंखला में प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है चूँकि इस में सबसे अधिक विकसित तथा सर्वोच्च जन्तु मनुष्य ही है अत: पारिस्थितिक तंत्र के प्रत्येक घटक के साथ उसका परस्पर संबंध है मानव आबादी में होने वाली बेतहाशा वृद्धि से प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हो रहा है जिससे पर्यावरण में असंतुलन होता जा रहा है अगर यही क्रम चलता रहा तो भयंकर दुष्परिणाम के लिए हमें सचेत रहना होगा। इसलिए हमारा यह सम्मिलित प्रयास होना चाहिए कि वातावरण जल मृदा एवं वायुमण्डल अत्यन्त स्वच्छ रहे एवं इनके जीवीय तथा अजीवीय तत्त्वों के बीच संतुलन बना रहे।

राखी के धागे

लघु कथा

मीरा जैन, उज्जैन

पवन की कलाई पर मोती जड़ित शुद्ध रेशमी धागे से बनी राखी अपनी सुंदरता पर इठलाते व अभिमान बिखेरते हुए पास बंधी सामान्य सी राखी को तुच्छ दृष्टि से देखते हुए बोली 'कहां तुम और कहां मै, मेरा तुम्हारा क्या मुकाबला, मेरा वश चले तो तुम्हें इस कलाई से ही बाहर कर दूं।' इस पर साधारण सी दिखने वाली राखी बातों में मिश्री घोलते हुए बोली 'बहन ! सुंदरता से क्या होता है हम दोनों का मकसद तो एक ही है जब हम बहनों के द्वारा भाइयों की कलाई पर बांध दी जाती है तब समान रूप से इस स्नेह एवं सुरक्षा का प्रतीक बन जातीं हैं' किंतु सुंदर राखी अपने अभिमान में फूले नहीं समा रही थी।

कुछ देर पश्चात पासा पलट गया, खूबसूरत राखी को पवन ने उठाकर एक ओर मेज के कोने में रख दिया क्योंकि वह बार-बार खुलकर गिर रही थी, वहीं साधारण सी राखी कलाई पर आराम से बंधी अपने उद्देश्य में सफल रही। दोनों राखियों में फर्क केवल इतना था कि खूबसूरत राखी जहां शुद्ध रेशम के धागे से बनी थी वह साधारण सी दिखने वाली राखी के रेशमी धागे ने अपने साथ सूती धागे को भी बराबरी से स्थान दे रखा था।

रक्षाबंधन

बहन,
तेरी शादी होने से पहले तक
रक्षाबंधन का त्यौहार
एक त्यौहार होता था।
दो महीने पहले से ही
सोचने लगता था कि
तुझे क्या गिफ्ट दूँ रक्षाबंधन पर।
जब तू चार साल की थी तो
तुझे रुपए और पैसे का
अंतर नहीं पता था।
मैं 2 रुपए देता था तो नहीं लेती थी
कहती थी पैसे दो
और चवन्नी हाथ में थमा देने पर ही
शांत होती थी।
तेरे समझदार होने के बाद भी
तेरी शादी से तक
उपहार में
भले ही मैंने ५०० रुपए का नोट दिया हो
लेकिन एक रुपए का सिक्का
जरूर देता रहा
ताकि
रक्षाबंधन के बहाने
तुझे तेरा बचपन हमेशा याद रहे।

तेरी शादी हुई
बहुत प्यार से विदा कर दिया तुझे।
फिर परदेस में बस जाने के बाद
वो रक्षाबंधन दोबारा नहीं आया।
अभी भी
हर रक्षाबंधन पर मोबाइल पर
एक दूसरे की आवाज सुनकर
बातें करके मन भर आता है
६० बरस से ऊपर तू भी है
और मैं भी.
भाई-बहन का प्यार आज भी वैसा ही है
हर बार सोचता हूँ तुझसे मिलने जाऊँ
लेकिन अब शरीर साथ नहीं देता है,
और हर रक्षाबंधन पर
तुझे सिक्का देने की ख्वाहिश
अधूरी ही रह जाती है।
तू आज भी मुझे 8 साल की
गुड़िया ही लगती है
जब तेरे बाल पकड़कर
टिपिया दिया करता था
और तू कहती थी-कुत्ते छोड़ दे।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

कल और आज

सपना चन्द्रा, भागलपुर

खूबसूरत थी कल भी
और खूबसूरत आज भी
कल खुद की नजरों से देखती थी
आज दुनिया उसे देखती है
वो अल्हड़ लड़की अब एक स्त्री है
बेबाकी तब्दील हो गई गंभीरता में
चोटी की जगह जुड़े ने ले ली
जिम्मेदारी को कसकर पकड़ रखा है
वही बेपरवाह लड़की....
आज रास्ते तलाशती ही नही
नया बनाती भी है
ताकि कोई नादान सी लड़की
कदम बढाए तो बेफिक्र हो कर...

हँसती हुई स्त्री को पसंद करना
जरा कठिन जान पड़ता है
नापती है नजरें वलयाकार होकर
कहीं कोई दाग तो नहीं..
वो तराश रही है हर रोज
अपनी कमियों से लड़ती है
स्वयं चुना है उसने इस युद्ध को
आजीवन चुनौती तय है

मीत मेरे

विभा कुमारी सिन्हा
जमशेदपुर

हर धड़कन में हर सांसों में,
मीत मेरे तुम मेरे पास होना।
जब बुलाऊं जब पुकारू,
नंगे पैर भी चले आना।
नैन बिछाए पलक लगाए बैठी,
तेरी राहों में मीत मेरे तुम।
मीठी मुस्कुराहट लिए हुए,
आहिस्ते से चले आना।
बरसे सावन जब धीरे से,
चुपके चुपके से जब बादल।
चले ठंड हवाओं के ढेर से,
झोके लेकर तुम चले आना।
चलती रहेगी सांसे मेरी ये,
लड़ियां ऐसे ना टूटेगी।
जब तक तुम ना आओगे,
तब तक ये सांसे ऐसी चलती रहेगी।
लाख तुम अपने आप को,
रोकना चाहो फिर भी रोक न पाओगे।
मैं पुकारती ही रहूंगी,
तुम्हें सुनाई देते ही रहेंगी ।

जय जय भारत नन्दन तुमको...

तुलसी दास जयन्ती पर विशेष

राम नाम की महिमा गाई।
राम राम सबसे कहलाई।।
रामचरित मानस को रचकर।
तुमने खूब ख्यति पाई।।

घर के आँगन मे है तुलसी।
काव्य और संगीत मे तुलसी।।
गीता, दोहा और कवितावली।
विनय पत्रिका भाव में तुलसी ।।

ब्रज अवधी भाषा को लेकर।
नव रस का प्रयोग कियहै सस
दोहा सोरठा, कवित, सवैया।
सबका ही उपयोग किया है।।

निर्गुण और सगुण की भक्ति।
सेवक बन स्वामी की भक्ति।।
रस फैलाकर राम भक्ति का।
श्रद्धा की भर दी है शक्ति।।

कण कण का है वंन्दन तुमको।
पुष्पों से अभिनन्दन तुमको ।।
महाकाव्य के तुम हो रचियता।
जय जय भारत नन्दन तुमको।।

डा. कविता भटनागर

औरत के कारण

एक मेरा दोस्त, आत्महत्या से पहले,
कविता लिखकर, छोड़ गया था!
उसने कारण, उजागर किया था,
आत्महत्या क्यों, करना पड़ रहा है!
उसने कविता में बताया,
मेरा जीवन था, औरत के कारण,
और मृत्यु भी, औरत के कारण!
ठण्ड में उपलब्ध, स्वेटर आदि,
गर्म कपड़े, मैंने पहने थे,
जो उस समय, मेरे पास उपलब्ध थे!
मां ने कहा था, बेटा, ठण्डी बहुत है,
ठण्ड न लग जाए, तू, अपने बाप की,
आलफी, ऊपर से पहन ले!
मां की मृत्यु से,
परेशान मुझे, पत्नी ने संभाला!
ठण्ड में कोट, पत्नी ने,
अपने हाथों से, पहनाया!
एक एक कपड़ों के दाग,
नहीं रहने पाते थे,
जहां भी गया, सजाकर पहुंचाया!
मैं उसके चयनित, कपड़े पहनता,
सोसायटी में, तारीफें होती!
अब वह भी, चली गई ,
भगवान को, प्यारी हो गई!
अब तो औरतें, मंडराती हैं,
तितलियों, की तरह!
मुझे संवारने के लिए नहीं,
मेरी जायदाद के लिए,
मैं, भूखा-प्यासा कैसा हूं,
कोई फर्क नहीं, दौलत के पीछे,
शर्म, हया पी गईं!
इसीलिए जा रहा हूं,
मां के पास, पत्नी के पास,
जहां शुकून है!
पढ़कर, मेरे रक्त के ,
चंद कतरे, आंसू बनकर,
उस, सुसाइड नोट को, भिगो दिया!!

सतीश 'बब्बा', चित्रकूट

उसके जुल्फो से टपकता पानी
कुछ और ही है बात
जैसे काली घटा से, यारो
हल्के बूँदो की बरसात
मुस्कुरा के छुड़ाना उसका
वो रंगीन चूड़ी भरे हाथ
कुछ पल उसके साथ जो बीते
जैसे यादो की बारात
काश उसके साथ हो जाए
फिर कंही मुलाकात
अमावस भी बन जाए
फिर दिलकश चाँदनी रात

मलय चक्रवर्ती

गज़ल

जब कोई वादा किया डटकर निभाते हैं।
वक्त आने पर नहीं ठेंगा दिखाते हैं।

दोस्त से कंधा मिलाकर साथ हैं चलते,
इस तरह हम दोस्तों का कद बढ़ाते हैं।

जब कभी भी शाम को मिलना नहीं होता,
याद बन इक दूसरे को याद आते हैं।

घेर लेती है उदासी मन नहीं लगता,
जब बिछड़कर दोस्त हमसे दूर जाते हैं।

दोस्ती में है नहीं छोटा बड़ा कोई,
बस यही 'ऋतुराज' हम सबको बताते हैं।

विकास सोनी 'ऋतुराज'

उठो जवान

उठो जवान,बढ़ो जवान,
घटने मत दो अपनी शान।
आंधी हो या हो तूफान,
आगे बढ़ते रहो जवान।
बैरी रच षड्यंत्र रहा है,
हो पीड़ित जनतंत्र रहा है,
सुखी शांत गणतंत्र वहां है,
आग उगलते यंत्र जहां हैं,
अब हो जाने दो घमासान,
उठो जवान, बढ़ो जवान।
भाल न मां का झुकने पाये,
चाहे जान भले ही जाये,
दुश्मन कोई न बचने पाये,
गद्दारों की सामत आये,
टूट पड़ो बनकर तूफान,
उठो जवान,बढ़ो जवान।
बनी रहे स्वदेश की शान,
आन वान और स्वाभिमान,
याद रखो पूर्वज महान,
मत भूलो अपनी पहचान,
हो जाओ चाहे कुर्बान,
उठो जवान, बढ़ो जवान,
घटने मत दो अपनी शान,
आंधी हो या हो तूफान,
आगे बढ़ते रहो जवान।

चन्द्रमोहन पाठक

इतना ही काफी है

साँझ-तलक कैसे भी मिल जाए
गर्म रोटी पर नमक-तेल,
इतना ही काफी है।
घासी ने दुक्खी को चाँप लिया,
हूक दबाता ही रह गया हिया,
मौन रहा पसराहीगली-गली,
तैल बिना आखिर बुझ गया दिया,
फिर गौरय्या को घेरे है बाज,
तुम उस पर तान दो गुलेल,
इतना ही काफी है।
सुबह-शाम बस, पूजा- अराधना,
सीख ली, हवा में गाँठ बाँधना,
देह धरे को दंड कहे, लेकिन
फलित करे अपनी छद्म-साधना,
पाखंडी ही आज बना विद्वान,
तुम बिगाड़ दो उसका खेल,
इतना ही काफी है।
हर कोई पूँजी के पाँव-तले,
श्रमिकों की छाती पर मूँग दले,
वक्त नहीं यह चुप रह जाने का,
सौंह तुम्हें, जो तुमने होंठ सिले,
रोटी को भी लूट रहा है जो,
तुम उसको पहुँचा दो जेल,
इतना ही काफी है।

राजेन्द्र वर्मा

मिलता है अपनापन नहीं

मन में दुखों की ग्रन्थियां
तन आवरण है विषाद का।
सिद्धांत से व्यवहार तक
मिलता है अपनापन नही।
यह जानता प्रत्येक है।
तम का चरित्र न नेक है।
अपवित्रतम उद्रेक से,
होता गरल अभिषेक है।
शंकित सभी किरदार पर।
बाँबी बनी दीवार पर।
फिर क्यों संपोलो से विमुख
होते भला चन्दन नहीं।
घेरे हुए इतिहास को
परछाइयां है प्यास की।
कब्रें अनेको घात की
कुछ अर्थियां विश्वास की।
बहरा हुआ क्यों देवता
अंधा हुआ क्यों आदमीं।
दिखता न कोई पाप क्यों
सुनता कोई क्रंदन नहीं।
क्या कह गए क्या कर गए।
अब कौन घाट उतर गए।
अभिमान शिखरों से गिरे
हो रक्त पथ पे बिखर गए।
परिचय पढ़ा तो अनूप था
प्रतिबिम्ब देखा कलुष निरा
ऐसे कुटिल व्यवहार का
देखें कभी आनन नहीं।

कमल मानव

हर लम्हें ताउम्र ही खूबसूरत हैं।
जिन्दगी, जिन्दादिली की सूरत है।
रेत मानिंद हाथो से फिसल जाएगी,
सीप 'मोती' सहेजने की जरूरत है।

सरिता वाजपेयी 'साक्षी'

कौन जाएगा राज्यसभा, भाजपा में एक सीट पर कई दावेदार

कवि कुमार विश्वास का नाम भी चर्चा में, ब्राह्मण चेहरे पर दांव लगा सकती है भाजपा

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में खाली हुई एक राज्यसभा सीट पर चुनाव आयोग ने चुनाव की घोषणा कर दी। यह सीट बीजेपी के राज्यसभा सदस्य हरिद्वार दुबे के निधन के बाद खाली हुई थी। 15 सितंबर को इस सीट पर वोट डाले जाएंगे। उसी दिन वोटों की गिनती भी होगी। चुनाव की घोषणा के साथ ही सवाल उठने लगा है कि आखिर भाजपा इस इकलौती राज्यसभा सीट पर किस पर अपना दांव लगाएगी क्योंकि माना जा रहा है कि जो भी प्रत्याशी होगा उसकी जीत सुनिष्चित है। हालांकि माना जा रहा है कि इस सीट पर हरिद्वार दुबे के स्थान पर भाजपा किसी ब्राहमण चेहरे पर ही अपना दांव लगाएगी लेकिन सबसे ज्यादा चर्चा देश के जाने माने कवि कुमार विष्वास को लेकर है। माना जा रहा है कि

भाजपा कवि कुमार विश्वास को भी अपना उम्मीदवार घोषित कर सकती है। दरअसल, भाजपा में अप्रैल महीने में जब मनोनीत कोटे से 6 एमएलसी के नाम की घोषणा हुई थी। तभी कुमार विश्वास को विधान परिषद भेजना चाहती थी। लेकिन ऐनवक्त पर उन्होंने मना कर दिया था। तब यह बात सामने आई थी कि वह राज्यसभा जाना चाहते हैं। अब माना जा रहा है कि राज्यसभा के लिए कुमार विश्वास केंद्रीय नेतृत्व की पहली पसंद हो सकते हैं। इसके अलावा, जिन दो और नाम को लेकर चर्चा है, वह दोनों प्रदेश पदाधिकारी है। इनमें एक नाम है दिनेश शर्मा का जो इस वक्त पार्टी में प्रदेश उपाध्यक्ष हैं। लंबे समय से पार्टी के लिए काम कर रहे हैं। पहले प्रान्त प्रचारक भी रह चुके हैं।

जबकि तीसरा नाम है ब्रज बहादुर का। ब्रज बहादुर भी पार्टी में प्रदेश उपाध्यक्ष हैं। लंबे समय से पार्टी संगठन के लिए काम कर रहे हैं। वर्तमान में जॉइनिंग कमेटी का दायित्व संभाल रहे हैं। ये दोनों ही पदाधिकारी ब्रज क्षेत्र से आते हैं। हालांकि, बीजेपी के मीडिया टीम के कुछ सदस्य भी इस सीट पर अपना टिकट पक्का कराने के लिए दिल्ली तक दौड़ लगा रहे हैं। हालांकि बीजेपी हमेशा अपने फैसलों से लोगों को चौंकाती रही है। ऐसे में केंद्रीय नेतृत्व की ओर से अगर कोई नाम आता है, तो जरूर पार्टी उसे सबसे ज्यादा प्रेफरेंस देगी। फ्लिहाल अभी इस बात की संभावना सबसे ज्यादा है कि इस सीट पर पार्टी अपने किसी ब्राह्मण चेहरे को ही मौका दे सकती है।

अब सुधरेगी यूपी की बिजली व्यवस्था

गुजरात, मध्य प्रदेश, हरियाणा भेजी गई अफसरों की टीम करेगी अध्ययन

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में बिजली व्यवस्था पटरी पर आने का नाम नहीं ले रही है। गलत बिलिंग, ओवरलोड जैसी समस्याओं के चलते एक ओर जहां उपभोक्ताओं को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है तो वहीं सरकार को भी राजस्व में हानि उठानी पड़ रही है। उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन लिमिटेड ने प्रदेश की बिजली व्यवस्था को गुजरात, मध्य प्रदेश और हरियाणा की तर्ज पर बेहतर बनाने के प्रयास शुरू किए हैं। बिजली कंपनियों के वरिष्ठ अधिकारियों की टीमों को इन तीनों राज्यों के अग्रणी वितरण निगमों के बेहतर कार्यों का अध्ययन करने के लिए भेजा गया है। तीनों टीमें 25 अगस्त तक इन राज्यों में हो रहे अच्छे कार्यों का अध्ययन कर अपनी रिपोर्ट पावर कारपोरेशन प्रबंधन को सौंपेंगी। दरअसल, पावर फायनेंस कारपोरेशन की रेटिंग में गुजरात, मध्य प्रदेश और हरियाणा की बिजली

कंपनियों ने मीटरिंग, बिलिंग, कलेक्शन एवं वितरण में अग्रणी स्थान हासिल किया है।

कारपोरेशन की वितरण कंपनियों द्वारा मीटरिंग, बिलिंग, कलेक्शन एवं वितरण के कार्यों में सुधार के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। गुजरात, मध्य प्रदेश तथा हरियाणा में मीटरिंग, बिलिंग, कलेक्शन एवं वितरण से संबंधित कार्यों का अध्ययन करने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों की तीन टीमों का गठन किया गया है। केस्को के प्रबंध निदेशक सैमुअल पाल के नेतृत्व में नौ सदस्यीय टीम गुजरात भेजी गई है। इसी तरह मध्यांचल डिस्काम के निदेशक वाणिज्य योगेश कुमार के नेतृत्व में आठ सदस्यीय टीम मध्य प्रदेश और पूर्वांचल डिस्काम के निदेशक वाणिज्य राजेंद्र प्रसाद के नेतृत्व में हरियाणा भेजी गई है। ये टीमें वहां किए जा रहे अच्छे कार्यों का बारीकी से अध्ययन करेगी और भ्रमण के उपरांत प्रत्येक टीम अपनी अपनी प्रस्तुति एक सप्ताह में पावर कारपोरेशन को देगी।

लोकसभा चुनाव में 'एकला चलो' की राह पर बसपा

मायावती ने खोले पत्ते, किसी भी गठबंधन में नहीं होगी शामिल

लोक पहल

लखनऊ। सभी कयासों को विराम देते हुए बसपा ने लोकसभा चुनाव में 'एकला चलो' की राह पर चलने का फैसला लिया है। बसपा प्रमुख मायावती ने लोकसभा चुनाव में किसी भी गठबंधन के साथ न जाते हुए अकेले अपने बूते चुनाव लड़ने की बात कही है। बसपा मुख्यालय में पदाधिकारियों की बैठक में उन्होंने साफ किया कि बसपा को उत्तर प्रदेश में गठबंधन करके लाभ के बजाए नुकसान ज्यादा उठाना पड़ा है, क्योंकि बसपा का वोट स्पष्ट तौर पर गठबंधन वाली दूसरी पार्टी को ट्रांसफर हो जाता है किंतु दूसरी पार्टियां अपना वोट बसपा उम्मीदवारों को ट्रांसफर करने की न सही नियत रखती हैं और न ही क्षमता। जिससे पार्टी के लोगों का मनोबल प्रभावित होता है और इसलिए इस कड़वी हकीकत को नजरअंदाज कर आगे नहीं बढ़ा जा सकता। बसपा सत्ता पक्ष व विपक्ष दोनों गठबंधनों से दूरी बनाए रखेगी।

इस मौके पर मायावती ने सत्ताधारी दल भाजपा के साथ-साथ कांग्रेस को भी निशाने पर लिया। कहा, कांग्रेस पार्टी की तरह ही भाजपा की कथनी व करनी में जमीन-आसमान का अंतर है। इनके राज

में लोगों की आमदनी अठन्नी व खर्च रुपया हो जाने के कारण कुछ मुट्ठी भर लोगों को छोड़कर, देश के बहुजन लोगों को परिवार का भरण-पोषण की कठिन विपत्ति का सामना करना पड़ रहा है।

मायावती ने कहा कि सत्ताधारी दल भाजपा की संकीर्ण, जातिवादी व सांप्रदायिक राजनीति और अराजकता को प्रश्रय देने वाले क्रियाकलापों के कारण लोगों का जीवन त्रस्त है। इसी वजह से भाजपा अपना प्रभाव ही नहीं बल्कि अपना जनाधार भी लगातार खो रही है। उन्होंने दावा किया कि लोकसभा का चुनाव यूपी में एकतरफा न होकर काफी दिलचस्प व देश की राजनीति को नई करवट देने वाला साबित होगा।

भाजपा सांसद वरूण गांधी के एक बार फिर बगावती तेवर

बोले एक भारत में दो हिन्दुस्तान नहीं होने चाहिए

लोक पहल

पीलीभीत। भाजपा सांसद वरूण गांधी एक बार फिर अपने बयान से चर्चा में आ गए हैं तथा उन्होंने अपनी पार्टी पर ही निषाना साधा है। लोकसभा चुनाव से पहले वरुण गांधी के बगावती तेवर की अक्सर चर्चा होती है। पीलीभीत दौरे पर गए सांसद ने एक बार फिर बीजेपी को असहज कर दिया। खेती-किसानी, किसान आंदोलन और बेरोजगारी का मुद्दा उठाते हुए वरुण गांधी ने पार्टी को असहज स्थिति में डालते हुए कहा कि दो हिंदुस्तान नहीं होने चाहिए। एक हिंदुस्तान में अमीर को सारे अवसर प्राप्त हैं और दूसरे हिंदुस्तान में आम आदमी का संघर्ष निरंतर जारी है।

उन्होंने मांग की कि हिंदुस्तान में सारे इंसानों को अवसर की प्राप्ति की कमी नहीं होनी चाहिए। जनसभा को संबोधित करते हुए वरुण गांधी भ्रष्टाचार के मुद्दे पर खुद की आत्म प्रशंसा करने से नहीं रोक पाए। उन्होंने दावा किया कि एक रुपए का भी कमीशन और रिश्वत नहीं खाया। सांसद ने पीलीभीत को घर बताते हुए कहा कि मेरे लिए पैसे और ताकत पूंजी नहीं हैं बल्कि आशीर्वाद और रिश्ते मेरी पूंजी हैं। उन्होंने कहा कि मैं राजनीति में कुछ बनने के लिए नहीं बल्कि कुछ करने के लिए आया हूं। वरुण गांधी ने कोराना काल में बिना सरकारी मदद के लोगों की सेवा करने की बात कही वरुण ने अपनी मां का जिक्र करते हुए कहा कि मेनका गांधी के बारे में कोई प्रतिद्वंद्वी भी भ्रष्टाचार की बात नहीं कहता है। वरुण गांधी ने कहा कि भारत मां की जय बोलना सिर्फनारा बनकर नहीं रह जाए। भारत की मां जय तब होगी जब भारत के सपूतों का सपना साकार होगा।

एक्सप्रेसवे पर बनेंगे नए औद्योगिक गलियारे, खुलेंगी सैकड़ों औद्योगिक इकाइयां

लोक पहल

लखनऊ। बेरोजगारी समस्या से निपटने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए नित नए प्रयोग कर रही है। प्रदेश में उद्योग फलफूल सके और उद्योगों को रफ्तार देने के लिए डिफेंस और इंडस्ट्रियल कॉरिडोर के बाद एक्सप्रेसवे औद्योगिक गलियारे का काम तेजी पकड़ने लगा है। बुंदेलखंड, आगरा-लखनऊ, पूर्वांचल और गंगा एक्सप्रेस वे के दोनों तरफ औद्योगिक पार्कों की स्थापना को हरी झंडी मिल गई है। इससे प्रदेश में 500 से ज्यादा बड़ी औद्योगिक इकाइयों के खुलने का रास्ता भी साफहो गया है।

यूपीडा इन चारों एक्सप्रेसवे के इंट्री व एग्जिट प्वॉइंट पर गलियारे के निर्माण के लिए 100-100 एकड़ जमीन का अधिग्रहण करेगा। गंगा एक्सप्रेस- वे से इसका आगाज हो गया है। 500 बड़ी इकाइयों की स्थापना को ध्यान में रखकर इस मेगा प्रोजेक्ट में करीब 4000 करोड़ रुपये खर्च होंगे। इसको लेकर कार्ययोजना तैयार हो गई है। इसमें एक्सप्रेसवे के सहारे उद्योगों के विकास का ब्लू प्रिंट बनाया गया है। योजना से जुड़े सूत्रों का कहना है कि औद्योगिक गलियारे के लिए पहले चरण में सौ-सौ एकड़ जमीन अधिग्रहण के बाद दूसरे चरण में मांग के अनुरूप और जमीन का अधिग्रहण किया जाएगा। यूपीडा के मुताबिक चारों एक्सप्रेसवे के किनारे खड़ी होने वाली इकाइयां राज्य के किसी भी कोने में अधिकतम 12 घंटे में अपने उत्पाद पहुंचाने में सक्षम होंगी। इससे सबसे ज्यादा विकास लॉजिस्टिक्स और वेयरहाउस सेक्टर का होगा। इसी के साथ इनमें भंडारण वाले उत्पादों की मांग में तेजी आएगी। यमुना और आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे के लिंक प्वाइंट पर भी औद्योगिक गलियारा स्थापित होगा। आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे के किनारे फि रोजाबाद व मैनपुरी, पूर्वांचल एक्सप्रेसवे के किनारे बाराबंकी और बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे के किनारे चित्रकूट में जमीन ली जा रही है।

बाला फीचर्स से लैस होंगे प्रदेश के को-लोकेटेड आंगनबाड़ी केंद्र

लोक पहल

लखनऊ। उप्र में प्राथमिक विद्यालयों व आंगनबाड़ी केन्द्रों में पढ़ने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण व रोचक शिक्षा दिए जाने के लिए सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। योगी सरकार उत्तर प्रदेश में छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के साथ-साथ शिक्षा को रोचक बनाकर बच्चों के सीखने की क्षमता को बेहतर बनाने की दिशा में कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री योगी के निर्देश पर परिषदीय विद्यालयों में खेलों के माध्यम से लर्निंग को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसी क्रम में अब परिषदीय प्राथमिक व कंपोजिट विद्यालयों के परिसर में स्थित को-लोकेटेड आंगनबाड़ी केंद्रों को बाला फीचर्स से लैस किया जाएगा। इसके लिए सरकार की ओर से प्रति केंद्र 30 हजार रुपए की धनराशि प्रदान की जाएगी।

महानिदेशक स्कूल शिक्षा विजय किरण आनंद की ओर से सभी बेसिक शिक्षा अधिकारियों को इस संबंध में निर्देश जारी किए गए हैं। आदेश में कहा गया है कि बाला फीचर्स संबंधी कार्य के लिए 30 हजार रुपए प्रति केंद्र की दर से एक करोड़ 12 लाख 50 हजार रुपए की लिमिट जनपदवार जारी की गई है। ऐसे विद्यालय जिनके परिसर में आंगनबाड़ी केंद्र अवस्थित हैं, उन विद्यालयों की प्रबंध समिति के खाते में धनराशि की लिमिट जारी की जाए व संबंधित

विद्यालय व खंड शिक्षा अधिकारी राज्य परियोजना कार्यालय से जारी निर्देशों के अनुसार को-लोकेटेड आंगनबाड़ी केंद्रों में बाला फीचर्स के कार्य को कराना सुनिश्चित करें। बाला फीचर्स के अर्न्तगत बिल्डिंग एज लर्निंग एड के तहत बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जायेगी। बाला का विकास कक्षा-कक्ष एवं विद्यालय को बच्चों के लिए मजे एवं आनंद की जगह बनाने में सहायक होता है। बाला के अंतर्गत कक्षा-कक्ष-आंगनबाड़ी केंद्र में उपलब्ध स्थान इस प्रकार तैयार करना कि बच्चे खेल-खेल में सीख सकें और उस स्थान का सुसज्जीकरण इस प्रकार हो कि वह एक संसाधन के रूप में कक्षा को सक्रिय बना सके। इस प्रकार विद्यालय परिवेश को सीखने के साधन के रूप में विकसित करना बाला फीचर्स के प्रमुख उद्देश्यों में है। विकसित किए जाने वाले बाला फीचर्स संबंधी कार्य में बाल वाटिका एवं मूलभूत साक्षरता के लिए चिह्नित अधिगम लक्ष्यों को आधार बनाया जाए। इसके अंतर्गत कक्ष के अंदर की चारों दीवारों को 1 मीटर की ऊंचाई तक वाटरप्रूफ हरा रंग किया जाएगा या फिर ब्लैकबोर्ड की तरह इस्तेमाल किया जाएगा। इसके लिए शिक्षकों को पहले ही ट्रेनिंग दी जा चुकी है। इसमें बच्चों, उनकी माताओं के साथ-साथ विद्यालय के प्रधानाध्यापक, नोडल अध्यापक, आंगनबाड़ी कार्यकत्री, सुपरवाइजर, ग्राम स्तर से आमंत्रित वरिष्ठ नागरिक सम्मिलित होंगे।

आवश्यकता है
लोक पहल
साप्ताहिक समाचार पत्र को
जनपद शाहजहाँपुर के समस्त क्षेत्रों, तहसीलों, ब्लाक एवं ग्राम स्तर पर संवाददाता चाहिए। पूर्ण बायोडाटा सहित आवेदन करें।
सम्पर्क करें : 9935740205, 9455152599 / Write to us : lokpahalspn@gmail.com

संकट के समय बने रहे अभिमन्यु जैसा

पूजा गुप्ता
मिर्जापुर उ.प्र.

विपरीत परिस्थिति अर्थात संकट का समय। ऐसा समय जो आपके समर्थन में नहीं है या संकटकाल है। संकट के समय ही यह सिद्ध करने का होता है कि आप योग्य हो, काबिल हो और सर्वेश्रेष्ठ हो। संकट चाहे खुद पर आया हो, परिवार पर, मित्र पर आया हो या आपके संस्थान पर आपको उस समय ही डटकर मुकाबला करना होता है। संकट के समय पलायन करने या हथियार डाल देने से धर्म का भी त्याग हो जाता है यदि चक्रव्यूह तोड़ना हो तो अभिमन्यु की तरह मैदान में डटे रहे।

संकट उसी व्यक्ति के समक्ष खड़े होते हैं जो उनका हल जानता है। सफलता का रास्ता आपके खिलाफ खड़ा किया गया विरोध और संकट ही बनाता है। विपरीत परिस्थितियों में संयम बनाए रखना बहुत ही मुश्किल होता है, क्योंकि, यह ऐसी परिस्थितियां होती हैं जब आप सही भी बोल रहे हो, आपकी कोई गलती भी ना हो, आपने कुछ गलत ना किया हो, फिर भी आपको गलत ही ठहराया जाता है। आपका सच भी झूठ हो जाता है। ऐसे में खुद पर संयम बनाए रखना बहुत ही मुश्किल होता है, बहुत ज्यादा मुश्किल होता है। लेकिन, यह भी एक सच है कि अगर इन विपरीत परिस्थितियों में, एक इंसान पूरी तरीके से खुद पर, अपनी जुबान पर, अपने गुस्से पर, संयम रखें तब उसे कोई नहीं हरा सकता। ऐसे इंसान को कोई मात नहीं दे सकता विपरीत परिस्थितियां भी नहीं।

आपके जीवन में ऐसे में बहुत सारे लोग आपके पास आएंगे, जो आपसे बहस करना चाहेंगे, आपको नीचा दिखाना चाहेंगे, आपसे बेमतलब की लड़ाई झगड़ा

करना चाहेंगे, ऐसे लोगों पर, उनकी बातों पर, किसी तरह का कोई भी ध्यान ना दें और ऐसे लोगों से बहस करने से बचें..।

विपरीत परिस्थितियों में अच्छे अच्छे लोगों का संयम खो जाता है, इसमें घबराने की कोई बात नही है क्योंकि हर समय परिस्थितियां बदलती रहती है। परिवर्तन संसार का नियम है, रोज सुबह सूरज आता और शाम को ढल जाता है। रोज फूल खिलते है फिर मुरझा जाते है। ऐसे ही अगर बुरा समय आया है तो अच्छा समय भी जल्दी आएगा। अपने आप को प्रकृति से जोड़े।आप धैर्य से काम ले अपने मन को संयमित करे, रोज सुबह कम से कम आधा घंटा ध्यान जरूर करे , आपका मन शांत होने लगेगा और धीरे धीरे सब ठीक हो जाएगा। परिस्थितियां फिर से सामान्य ही जाएगी।

जीवन एक गुरुकुल है और आपको एक योग्य शिष्य होने के लिए संघर्ष कभी नहीं त्यागना चाहिए। मनुष्य जिस पल संघर्ष त्याग देता है, तब वह एक निष्क्रिय व्यक्ति बन जाता है। इसलिए जीवन में सभी शिष्यों के लिए पहला लक्ष्य एक अच्छा शिष्य बनना है। कठिन परिश्रम से लक्ष्य की प्राप्ति होती है। जीवन में संघर्ष से न घबराएं और सपनों को ऊंची उड़ान दें। ये संघर्ष ही हैं जो आपके जीवन को महकाते हैं। आपका महत्व बताते हैं और आपको भीड़ से बाहर निकालकर स्थापित करते हैं। गुलाब कांटों से घिरा रहता है, लेकिन वह सदैव अपनी सुगंध देता रहता है। उसी तरह मनुष्य को भी संघर्षों, विपरीत परिस्थितियों में दूसरों के प्रति दया, प्रेम और करुणा के भाव अपनाने चाहिए तभी जीवन रूपी बगिया में वह अपनी पहचान स्थापित कर सकता है। इसलिए दुखों से घिरे लोगों के प्रति सेवा का भाव रखें एवं सदाचारों से पूर्ण आदर्श जीवन जिएं।

इस ओर ध्यान देने की बात है कि वर्तमान में हमने अपनी सुख-शांति को अपने भौतिक सुखों के आगे गिरवी रख दिया है जो हमारी अशांति और तनाव का कारण है। सबसे जरूरी बात यह है कि आपका आचरण तथा मन शुद्ध होना चाहिए। इससे आपके विचार, बोल और कर्म सकारात्मक होंगे। साथ ही इनमें समन्वय बनाना भी बहुत आवश्यक है। अपनी इच्छाओं को समाप्त न करें। सपने देखें और उन्हें पूरा करने का दृढ़ संकल्प करें। सफलता के लिए सिद्धांतों का पालन करना जरूरी है। इसलिए हमेशा शांत रहें क्योंकि गुस्से से नकारात्मकता आती है। जीवन जीने का उद्देश्य इसी में है कि हम अपने परिवार, समाज और राष्ट्र से प्रेम करें, दूसरों का आदर करें और उस परम तत्व पर विश्वास रखें। हर सफल इंसान की जिंदगी में संघर्ष की एक कहानी अवश्य होती है, तो फिर संघर्ष से क्यों घबराना। यदि आप संघर्ष कर रहे हों तो सफलता दूर नहीं। संघर्ष शांति देता है। हर सफल व्यक्ति का जीवन कभी न कभी संघर्षपूर्ण रहता है। हम इस बात से भी इनकार नहीं कर सकते कि जिंदगी का दूसरा नाम संघर्ष है।

ध्यान रखने वाली बात यह है कि प्रत्येक असफलता के साथ हमारा प्रयत्न जारी रहना चाहिए। जितनी भी बार मानव गिरे उतनी ही बार उठने में उसका गौरव है। साहसी के लिए विश्व में कुछ भी कठिन नहीं है। संशयशील व्यक्तियों के लिए प्रत्येक कार्य असंभव है क्योंकि उसे ऐसा ही प्रतीत होता है। असंभव कहीं और नहीं, निर्बल व्यक्ति के मन में रहता है। साहस और विश्वास ऐसा संबल हैं जिन्हें साथ लेकर चलने से बड़ी से बड़ी बाधा अपने आप दूर हो जाती है।

अब पहुँच में हमारी जमीं आसमाँ
झूम उठ्ठी यही सोचकर कहकशाँ

चाँद का यह सफर इतना मुमकिन कहाँ
अहद जब कर लिया तो दिया इम्तिहाँ
मुल्क पहुँचा नहीं कोई अबतक वहाँ
नाज हम पर करेगा ये सारा जहाँ

रात दिन चाँद पर होगा रंगी समाँ
झूम उठ्ठी यही सोचकर कहकशाँ

हम कदम दर कदम आगे बढ़ते रहे
एक दो तीन कर यान उड़ते रहे
खोज दिन रात हम अपनी करते रहे
और मेहनत लगन से निखरते रहे

अब खुदा भी हमीं पर हुआ मेहरबाँ
झूम उठ्ठी यही सोचकर कहकशाँ

देखो पूरा किया हमने अपना कथन
साथ मिल कर किये खूब सारे जतन
तब कहीं जा मिला हमको चँदा रतन
अब भरोसा करें हम पे अहले जमन

नाज करने लगा देखो सारा जहाँ
झूम उठ्ठी यही सोचकर कहकशाँ

सब हुनर से हमारे ठिकाने लगे
चाँद पर भी जमीं से निशाने लगे
कारनामे हमारे लुभाने लगे
गीत सूरज सितारे भी गाने लगे

चंद्रमा पर हमारा भी होगा मकाँ
झूम उठ्ठी यही सोचकर कहकशाँ

यह सफलता मुबारक जमीं और गगन
यह जहाँ सारा नाचे है होकर मगन
काम भारत करे दिल में रखकर लगन
दुश्मनों के दिलों में लगी है अगन

अहद हमने किया राज होंगे अयाँ
झूम उठ्ठी यही सोचकर कहकशाँ

आतिश मुरादाबादी

रख दिये हैं कदम आज बढ़कर वहीं
थी जहाँ तक रसाई किसी की नहीं
दाद चाहेंगे हम तुमसे अहले जमीं
हर गुमां को बनाया सरापा यकीं

काम ऐसा किया हो गये मोहतरम
चांद पर हम हैं और चांद जेरे कदम

कोशिशों से कभी मुंह को मोड़ा नहीं
थोड़ा धीरज धरा, सब्र छोड़ा नहीं
कोई रिश्ता उदासी से जोड़ा नहीं
अज्म जो कर लिया उसको तोड़ा नहीं

दिल में लाये न अफसोस, रंजो अलम
चांद पर हम हैं और चांद जेरे कदम

एक दूजे के हम दस्तो बाजू बने
घुप अंधेरों में हम जलते जुगनू बने
पत्थरों पर निशाँ डालती जू बने
तब कहीं जा के महके हैं, खुशबू बने

हम ने कर के दिखाया जो खाई कसम
चांद पर हम हैं और चांद जेरे कदम

हो मुबारक सभी को ऐ अहले वतन!
है जमाने पे रौशन हमारा ये फन
हिंद का इल्म है हर तरफजौ फिशान
देख लो चांद पर आज इसकी किरन

और सूरज तुझे आगे देखेंगे हम
चांद पर हम हैं और चांद जेरे कदम

इशरत सग़ीर

कर्तव्य

रानी प्रियंका वल्लरी
हरियाणा

लघुकथा

'माँ आज तुमसे आज कुछ जरूरी बात करनी है' 'तू कहाँ रहती है? 'जब भी फोन करता हूँ तू गायब ही रहती है कहीं भैया सब ने तुम्हें नौकरानी तो नही बना लिया ? 'नही बेटा हमे हमारे बेटे बहू ऐसा कभी नही कर सकते। 'बेटा तो छोड़ बहू हमारी हीरे की चुन्नी है' कभी चाय तक नही बनाने देती। तू बता बेटा कैसा है? बहू बच्चे ठीक तो है ना ? हाँ ठीक है। तू ये बता माँ हमे जीने देगी की नही? 'अरे !बेटा हमने क्या कह दिया तुम्हें जो तुम ऐसी बातें कर रहे हो, मै तो यही दुआ करती हूँ की हमारे बच्चे को हमारी उम्र लग जाए। 'नही माँ तू ऐसा कुछ नही सोचती अगर सोचती तो तू हमे इस तरह किराए के मकान में ना रहना पड़ता' 'तू हामी तो भर 'पापा ने जो जमीन शहर में ली थी उसपर मकान बनाने के लिये 'बोलो माँ चुप क्यूं हो? चुप नही हूँ वो जमीन तेरे पापा ने बड़े अरमान से लिया था पर वो सपना बन कर ही रह गया आज तक। मै तो चाहती हूँ, तुम सब अपना मकान बना लो, पर सब भाईयों के विचार बिना कैसे कह दूं। कोई नही अगर तुम्हार बनाना चाहते हो तो बनाओ। ठीक है माँ। तुम भी आ जाओ मेरे पास। ठीक बेटा आ जाऊँगी। 'कुछ दिन सब अच्छा चल रहा था' 'माँ जी मै अपने काम पर जाने में देर हो जाती हूँ 'सुबह का नाश्ता बनाने में मदद कर दिया कीजिए' ठीक है बहू। 'माँ जी बहुत थक जाती हूँ शाम तक आते आते' आप रात का खाना बना दिया कीजिए, ठीक है बहू। बहू आज हमारे सिर में दर्द है आज मेरे सिर में जरा मालिश कर दो। 'कितना बढ़िया दूर थी बुढ़िया मेरे दिमाग का दही करके रख दी' 'मै बुलाई हूँ जो मेरा काम आसान हो जाए अब ये हमसे ही मालिश करवाएगी' 'अपने माँ को जाकर समझाओ' यह सब मेरे वश की नहीं' थोड़े पैसे खर्च करूँगी तो किसी मेड को रख लुँगी' सुबह शाम के किच-किच से मुक्ति मिलेगी। निशा ने आंख गुड़ड़ते शिखर से कही 'शिखर ने समझाते हुए अपने पत्नी निशा से कहा 'निशा माँ की तुलना तुम नौकरानी से कर रहे हो' 'तुम्हें पता तक है माँ ने हमें किस कठिनाइयों से निकाल कर यहां तक पहुँचाई हैं' 'अब रहने भी दो शिखर तुम भी अपनी माँ की तारीफदारी में मत लग जाओ' 'यह माँ -पिता का कर्तव्य होता हैं' सही कह रही हो निशा 'कर्तव्य' 'हम बच्चों का कर्तव्य क्या हैं ? 'माँ -बाप बच्चे बीमारी से तड़पते रहे हम समय का बहाना बनाते रहें' 'मतलब तुम्हारे लिए एक शब्द के दो दो परिभाषा हैं' 'अपने अनुसार...

गिरिजा देवी पानी लेने के लिए रसोई की तरफजा रही थी तो बहू-बेटे की सारी बातें सुन ली। बेटे शिखर को समझाते हुए कहा बटे बहू सही ही तो कह रही हैं। हर माँ-बाप का दायित्व होता हैं बच्चों को पढ़ाना लिखाना। बहू तुम ऐसा करो कल सुबह अपने लिए एक मकान देख लो। मैं इस मकान को पीजी बनाना चाहती हूँ। हाँ जरा जल्दी करना मैं नगरपालिका जाकर कुछ जरूरत के कागज बनबा लाई हूँ। वह सब सत्यापन के लिए आने वाले हैं। शिखा निःशब्द हो गिरिजा देवी के बदले रूप को देख रही थी। वहीं शिखर अपने माँ के इस रूप को देखकर मुस्कुरा रहा था।

आधुनिकता के दौर में

डा. पूर्णिमा श्रीवास्तव
जयपुर

आज आधुनिकता की चकाचौंध हर तरफअपना परचम फैला चुकी है चारों ओर पश्चिमी सभ्यता का ही आड़म्बर दिखाई देता है, संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों का तो जैसे दौर तेजी से घटने की होड़ में है। शिष्टाचार और नैतिकता जीवन के जो आधार स्तम्भ माने जाते थे, आज के युवा का इनसे लाचार हो गया है। और इसका दोष मढ़ दिया सबने युवा पीढ़ी को और कलंक का नाम दिया, क्या सच में सिर्फयुवा इसके जिम्मेदार है। माना गलत राह पर चल रहा है युवा, लेकिन बहुत कुछ हद तक समाज और परिवार भी हिस्सेदार है। क्योंकि जब युवा अपनी विकसित अवस्था में था उसका दिमाग बिलकुल शुन्य था, वाल्यकाल उसका कुछ भी गढ़ने की रचने की , सृजन की क्षमता में नहीं था वह तो तैयार हो रहा था जीवन के मार्ग पर स्वयं को स्थापित करने के लिए। सुनकर वो दादा दादी की कहानियों का सार वह भी अपने जीवन के सार की कल्पना कर रहा था, वो कहानियां कड़ी होती थी बच्चों में,शिष्टाचार ,वो प्यार ,अपनत्व, आदर के भाव को सृजनित करने की। पुस्तकों की भीड़ जीवन का अनुसरण, अनुशासन,नैतिक शिक्षा का ज्ञान थी आज वो सब पीछे क्यों युही छुट रहा है नहीं इन्हें छुड़ाने वाले लोग तो कोई और ही है एक बाल युवा में स्वयं को जानने का ज्ञान नहीं होता वो तो अपने बड़ों को अनुसरण कर के ही अपने लिए मार्ग का चयन करता है, फिर वह दोषी कैसे हुआ? सब को आधुनिकता की रेस तो याद रह गयी है, पर इंसान, इंसान बनाना भूलता गया।

दुनिया कंप्यूटर, विडियो गेम्स, कौमिक्स और फिल्मी गानों से कुछ ऐसी बदल गयी, बचपन से जेहन में एक जंग छिड़नी शुरू हो गयी, स्त्री पुरूष के बीच फर्क की नींव पड़ गयी। एक दूसरे से श्रेष्ठ होने की प्रतिस्पर्धा छिड़ गई और इस प्रतिस्पर्धा में हम अपनी ही प्रतिष्ठा भूल गए। दोनों लगे हैं एक दूजे को झुकाने में, शव की चिता से ज्यादा भावनाओं की चिताए जल रही है। अहम दिमाग में सब के घर बना बैठा है, जैसे इंसानों की दुनिया न हो बस मतलब की दुनिया में मतलब साधने में सबकी जिंदगी गुजार हो रही है। भगत सिंह, स्वामी विवेकानंद जी दौर तो इतिहास है, बीते जमाने जो बीत गए ने दौर में अब वो अफसाने हो

गए हैं, और नये दौर में पैसा और पावर अब फंसाने बन गए हैं।अब तो न्यूज चौनल भी एक तरफा पहलु दिखाकर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो रहे हैं,असली समाज का चेहरा छुपाने में इन्होंने ही सबसे अधिक महारत हासिल की हुई है और जो कमी रह गयी थी नैतिकता के खातें में, उस कमी को सोशल साइट्स, फिल्मो ने टी वी सीरियल ने पूरा कर दिया, बाकी रही रिश्तों को निभाने का दस्तूर वो भी पैसा और पावर के दम पर चलाएं जा रहे हैं क्योंकि भावनाओं की तो पहले ही चिता जलाई जा चुकी है रिश्तों के मतलब तो सब भूल ही गये है,मतलब के रिश्ते बस अब यहाँ बाकी रह गये। माता पिता भी एक रेस का हिस्सा हो गये, बच्चों के लिए कमाने निकले और ऐसे व्यस्त हुए की बच्चों से तो क्या खुद से ही बेफिक्र हो गये। बच्चे ने भी अकेलेपन को भरने के लिये खुद को टीवी और कम्प्यूटर मोबाइल को सहारा बना लिया ,जो समय सबका एक साथ गुजरना था, सब अपने खुद में खुद को व्यस्त यु करते जा रहे हैं जिससे एक ही घर में एक अजब दायरा बन गया है, सब एक दूसरे को खुद से बेदखल करते जा रहे हैं। क्या यही आधुनिकता की चकाचौंध चारों ओर है, जहां संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों का नहीं कोई छोर है। दोष सबने रख दिया युवा को कलंक दिया, क्या सच में सिर्फयुवा ही इसका जिम्मेदार है? माना गलत राह पर चल रहा है युवा, पर इस राह पर लाने वाला भी तो परिवार और समाज हैं।... आज हम इतनी तरक्की कर चुके हैं कि चंद्रमा पर भी पहुंच गए, परंतु जीवन की प्राथमिक आवश्यकता घर,परिवार, रिश्तों से दूर हो गए,क्षणिक सुख के लिए सच्चे सुख को भूल गए,एक वो जमाने का भी दौर था चिठियों का जब लोग महीनों संदेशों का इंतजार किया करते थे ब ये दौर है आधुनिकता का अगर एक बार किसी ने फोन नहीं उठाया तो रिश्ते खत्म, ये है आज के दौर में रिश्तों की परिभाषा और गर्व कर रहे हैं हम भारतीय हैं और विकसित है। आधुनिकता की दौर में इमारतें तो बिना नींव के हम ऊंची ऊंची खड़ी करते जा रहे हैं परन्तु जिस दिन ये धराशाई होगी उस दिन का क्या मंजर होगा....हम ज्यादा कुछ नहीं कहेंगे लेकिन जिस दिन समझोगे तब बस ढुढोगे।

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक-सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।

संस्कृत भाषा में निहित है विश्व कल्याण का मंत्र

डा. श्रीकांत मिश्रा

विश्व संस्कृत दिवस पर विशेष

संपूर्ण विश्व में शांति और संपन्नता की कामना करना संस्कृत साहित्य की विशेषता है। संस्कृत मंगल कामनाओं का विधान तो करती ही है साथ ही साथ मंगल कामनाओं को यथार्थ के धरातल पर उतरने के लिए ज्ञान- विज्ञान, योग,एवं आयुर्वेद का वरदान मानव को प्रदान करती है। आयुर्वेद चिकित्सा व्यवस्था का आज भी सर्वाधिक सशक्त माध्यम है, योग आज विश्व में अपना परचम लहरा रहा है । विज्ञान के क्षेत्र में इस भाषा की जैसी उन्नति पहले हो चुकी है उतनी उन्नति आज तक किसी भी भाषा में संभव नहीं हुई। ज्ञान-विज्ञान, चिकित्सा इत्यादि के क्षेत्र में संस्कृत को जैसा महारत हासिल हुआ वह निश्चय ही हमारे लिए गर्व का विषय है। मानव जीवन अपनी उत्पत्ति के सिद्धांतों को खोजता हुआ अहम् ब्रह्मास्मि के सिद्धांत को प्राप्त कर लेता है, यह छोटी बात नहीं है। जहां आत्म कल्याण की बात हो वहां संस्कृत भाषा में रचा हुआ साहित्य ना हो ऐसा संभव नहीं। माया, ब्रह्म, जीव, जगदीश जैसे कठिन दार्शनिक प्रश्नों को संस्कृत भाषा के सूत्रों में बड़ी सहजता से व्याख्यायित किया गया है।

भौतिक और आध्यात्मिक जगत की जैसी उन्नति संस्कृत भाषा के साहित्य में देखी जाती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। संपूर्ण विश्व का अध्यात्म पारायण मानव भारतीय ज्ञान संपदा की ही प्रशंसा करता है। जो लोग संस्कृत को केवल कर्मकांड और उपासना पद्धति की ही भाषा कहते हैं वह निश्चय है बुद्धि से विपन्न है उनके पास ज्ञान का अकाल है। मैं भारतीय संस्कृति ज्ञान-विज्ञान पद्धति का स्मरण करता हूं तो मुझे याद आते है पौराणिक आख्यान, जिसमें शल्य चिकित्सा द्वारा गौरी नंदन गणेश जी के धड़ से हाथी के सर को कुशलता पूर्वक प्रत्यारोपित कर दिया गया था । चमन ऋषि की बीत चुकी युवावस्था को अश्वनी कुमारों ने किस औषधि से पुन: उन्हें वापस कर दिया इस पर आज भी शोध की आवश्यकता है। पुरुष को मातृत्व सुख प्राप्त होना आज के युग की आश्चर्यचकित कर देने वाली घटना होंगी लेकिन संस्कृत साहित्य से ज्ञात होता है कि राजा मांधाता अपने पिता से उत्पन्न हुए थे यह कोई चमत्कार नहीं था यह तत्कालीन चिकित्सा विज्ञान की उन्नति का शिखर था। बहुत पहले ही संस्कृत साहित्य में लिंग परिवर्तन के उदाहरण मौजूद है।आज आग में न जलने वाले वस्त्र निर्मित

किया जा रहे हैं लेकिन संस्कृत साहित्य में वर्णित होलिका के पास ऐसा वस्त्र मौजूद था जिससे उस पर अग्नि का प्रभाव नहीं पड़ता था।

सुरक्षा के क्षेत्र में संस्कृत के ग्रन्थों में मिलता है की तत्कालीन योद्धाओं के पास परमाणु संपन्न हथियार हुआ करते थे। सुदर्शन, पिनाक, गांडीव एवं वज्र जैसे न जाने कितने अस्त्र शास्त्र उस समय की सुरक्षा व्यवस्था का परिचय करा रहे हैं। इसी व्यवस्था में मन के अनुकूल चलने वाले इको फ्रेंडली पुष्पक विमान जैसे अनेक विमानों के उल्लेख है। टेलीपैथी प्राचीन भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। शिक्षा क्षेत्र में भी संस्कृत भाषा का साहित्य हमें बताता है कि इस में आध्यात्मिक और भौतिक जगत के प्रत्येक जटिल प्रश्न पर गहन चिंतन मनन किया गया है। नई पीढ़ी को भारत के शास्त्रों में वर्णित खगोलीय सूत्रों को वैज्ञानिक ढंग से सिद्ध करने और उनके नए सिरे से अध्ययन करने के लिए आगे आना चाहिए। यह हमारी विरासत और और विज्ञान दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।

संस्कृत आज नवाचार के युग में नए-नए प्रयोग कर रही है। मुमुक्षु शिक्षा संकुल, शाहजहांपुर के अधिष्ठाता पूज्य स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती महाराज ने संस्कृत भाषा के महत्व को रेखांकित करते हुए पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में कहा था कि- यदि मानव को सुसंस्कृत और सही दिशा में विकास करना है तो हमें अपने बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ना होगा। ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार,हाऊ आई वंडर व्हाट यू आर। को त्याग कर भारतीय चिंतन धारा से समन्वित कविताओं को अपने बालकों हेतु प्रस्तुत करना होगा। आधुनिक शोधों से सिद्ध हो चुका है संस्कृत विकास के उच्चतम सोपान की भाषा है। ऐसा कौन सा क्षेत्र है जिसमें संस्कृत भाषा ने अपने महारथ को प्रदर्शित न किया हो। भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा का संबंध किसी से छिपा नहीं है। संस्कृत केवल भाषा ही नहीं है बल्कि मानवता का संपूर्ण जीवन दर्शन है। संस्कृत भाषा में आज रोजगार के विविध द्वार खुले हैं संपूर्ण विश्व के विकसित देश भी संस्कृत भाषा साहित्य की ज्ञान परंपरा का सम्मान कर रहे हैं। विश्व संस्कृत दिवस पर मैं आज के युवाओं का आवाहन करना चाहूंगा कि वे आगे आएं और भारतीय ज्ञान परंपरा की नवीन संदर्भों में स्थापना करें और जीव मात्र के कल्याण हेतु सन्नद्ध हो।

सारे जग से न्यारे भैया

देखो राखी वाला आया।
रंग-बिरंगी राखी लाया।
सबसे प्यारी मेरी राखी।
रेशम वाली मेरी राखी।
राखी लेकर बहना आई।
पीली भैया को है भाई।
लेकर अपने साथ मिठाई।
देखो मेरी बहना आई।
बहना कहती प्यारे भैया।
सारे जग से न्यारे भैया।
देखो राखी का दिन आया।
भैया ने है हाथ बढ़ाया।
बहना लिए मिठाई बैठी।
देखो भैया से है कहती।
प्यार भरा है अपना रिश्ता।
मेरा भैया लगे फरिश्ता।
भैया करता बातें प्यारी।
मेरी बहना राजकुमारी।

कु. आरजू सिंह

भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक है रक्षाबंधन

भाई एवं बहन के प्रेम का प्रतीक रक्षाबंधन पर वह मानने को लेकर लोगों के बीच में भ्रम की स्थिति है। रक्षाबंधन का त्योहार हर साल सावन मास की पूर्णिमा को भद्रा के बाद ही मनाया जाता है। हिंदू पंचांग के अनुसार इस बार रक्षाबंधन पर्व 3 अगस्त को मनाया जाएगा। वहीं कुछ ज्योतिषाचार्यों का कहना है कि चूंकि हिन्दू पंचांग में उदया तिथि का महत्व होता है इसलिए इस बार रक्षा बंधन का पर्व 31 अगस्त को मनाया जाएगा। हालांकि रक्षाबंधन के दिन इस बात का ख्याल रखना चाहिए की भद्रकाल में राखी नहीं बांधनी चाहिए। दरअसल, भद्रकाल को अशुभ मुहूर्त है। इसलिए लिए शुभ मुहूर्त में ही बहनों को अपने भाईयों की कलाई पर राखी बांधनी चाहिए। हिंदू पंचांग के मुताबिक रक्षाबंधन सावन महीने की पूर्णिमा का हर साल मनाया जाता है। भाई-बहन के पवित्र रिश्ते का यह त्योहार पूरे भारत वर्ष में उत्साह के साथ मनाया जाता है और बहनें अपने भाई की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधकर भाई की लंबी उम्र की कामना करती है, वहीं भाई भी बहन की रक्षा करने का संकल्प लेता है। धार्मिक ग्रंथों के मुताबिक रक्षाबंधन का पर्व भद्रा काल में नहीं मनाना चाहिए। धार्मिक मान्यता है कि भद्रा काल के दौरान राखी बांधना शुभ नहीं होता है। पौराणिक कथा के अनुसार लंकापति रावण को उसकी बहन ने भद्रा काल में राखी बांधी थी और उसी साल प्रभु राम के हाथों रावण का वध हुआ था। इस कारण से भद्रा काल में कभी भी राखी नहीं बांधी जाती है। पंडित राम खिलावन मिश्रा ने बताया कि इस बार रक्षा बंधन का पर्व 31 अगस्त को मनाया जाएगा।

रक्षा बंधन को लेकर कई कथाएं प्रचलित हैं। उन्ही में

से एक है भगवान इंद्र और उनकी पत्नी सची की। इस कथा का जिक्र भविष्य पुराण में किया गया है। असुरों का राजा बलि ने जब देवताओं पर हमला किया तो इंद्र की पत्नी सची काफी परेशान हो गई थी। इसके बाद वह मदद के लिए भगवान विष्णु के पास पहुंची। भगवान विष्णु ने सची को एक धागा दिया और कहा कि इसे अपने पति की कलाई पर बांधे जिससे उनकी जीत होगी। सती ने ऐसा ही किया और इस युद्ध में देवताओं की जीन हुई। इसके अलावा रक्षाबंधन को लेकर महाभारत काल से जुड़ी भी एक कथा है। जब शिशुपाल के युद्ध के समय भगवान विष्णु की तर्जनी उंगली कट गई थी तब द्रौपदी ने अपनी साड़ी का पल्लू फाड़कर उनके बाथ पर बांध दिया था। इसके बाद भगवान विष्णु ने उनकी रक्षा का वचन दिया था। अपने वचन के अनुसार, भगवान कृष्ण ने ही चीरहरण के दौरान द्रौपदी की रक्षा की थी।

धार्मिक मान्यता के अनुसार शिशुपाल राजा का वध करते समय भगवान श्री कृष्ण के बाएं हाथ से खून बहने लगा तो द्रोपदी ने तत्काल अपनी साड़ी का पल्लू फाड़कर उनके हाथ की अंगुली पर बांध दिया। कहा जाता है कि तभी से भगवान कृष्ण द्रोपदी को अपनी बहन मानने लगे और सालों के बाद जब पांडवों ने द्रोपदी को जुए में हरा दिया और भरी सभा में जब दुशासन द्रोपदी का चीरहरण करने लगा तो भगवान कृष्ण ने भाई का फर्ज निभाते हुए उसकी लाज बचाई थी। मान्यता है कि तभी से रक्षाबंधन का पर्व मनाया जाने लगा जो आज भी बदस्तूर जारी है। श्रावण मास की पूर्णिमा को भाई-बहन के प्यार का त्योहार रक्षाबंधन मनाया जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार रावण की बहन ने भद्रा में उसे रक्षा सूत्र बांधा था जिससे रावण का सर्वनाश हो गया था।

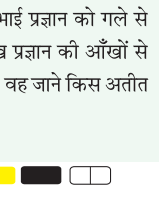

कटिया टोला मन्दिर के पुजारी और पार्षद पं. रामखिलावन मिश्रा ने बताया कि 30 तारीख को करीब 10.30 बजे पूर्णिमा लग रही है। चूंकि हिन्दू पंचांग में उदया तिथि को माना जाता है इसलिए 30 को रक्षाबंधन का पर्व नहीं मनाया जाएगा। इसका एक और कारण यह है कि पूर्णिमा के लगने के साथ ही भद्रा भी लग जाएंगे और भद्रा में कोई भी शुभ काम नहीं किया जाता है। इसलिए इस बार रक्षाबंधन का पर्व 31 अगस्त को ही मनाया जाएगा।

उपहार

प्रभुनाथ शुक्ल

रक्षाबंधन पर विशेष

प्रज्ञान न जाने किस उधेड़बुन में खोया-खोया सा था। उसे कुछ अच्छा ही नहीं लग रहा था। दो-तीन दिन से उसने खाना भी मन से नहीं खाया था। बस ! मौन सा खुद से बातें करता और बार-बार आसमान को निहारता। प्रज्ञान के भीतर चल रहे इस संघर्ष को पत्नी सरला अच्छी तरह समझती थी। वह पढ़ी-लिखी महिला थी। लेकिन वह भी बेबस थी। देखो ! प्रज्ञान इस तरह काम नहीं चलेगा। तुम्हारी उदासी मुझसे देखी नहीं जाती। मैं तुम्हारे भीतर चल रहे संघर्ष को समझती हूँ। मैं तुम्हारी धर्मपत्नी हूँ। तुम्हारे हर सुख -दु:ख की सहभागी हूँ। मैं जानती हूँ तुम्हारी नौकरी छुट गयी है। बच्चों की पढ़ाई और घर खर्च चलाना मुश्किल हो रहा है। हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। तुम बेगार हो गए हो। तुम्हारे पास कौड़ी नहीं है। रक्षाबंधन का त्यौहार करीब है। मीना दीदी कल तुम्हें राखी बाँधने आएंगी। लेकिन तुम उन्हें कुछ दे नहीं पाओगे। बाबूजी तुम्हें संभालते रहे लेकिन अब वे भी दुनिया से अलबिदा हो गए। सरला ने एक लम्बी सांस लेते हुए बुझी निगाहों से कहा था मैं सब समझती हूँ प्रज्ञान, लेकिन चिंता मत कीजिए।

प्रज्ञान ! तुम इतने उदास मत हो। तुम्हारी उदासी मुझसे नहीं देखी जाती। तुम मेरी जिंदगी और उम्मीद हो। तुम्हारा विचलित होना मुझे अंदर से तोड़ता है। आज जब मेरा बुरा वक्त आ गया तो मुझे कोई नहीं पूछता। मेरे बाबू जी के जाने के बाद तुमने मेरे मायके की गिरी हालत को कहाँ से कहाँ पंहुचा दिया। आज मेरे भाई आसमान नाप रहें हैं। लेकिन अब उन्हें जीजा और दीदी चूसे हुए गन्ने की तरह लगते हैं। तुमने कितना कुछ नहीं किया मेरे भाईयों के लिए। लेकिन मेरी हालत पर अब कोई तरस नहीं खाता। लोग मुफ्त की कॉल भी नहीं करते। भाभियाँ कॉल उठाने से कतराती हैं कहीं मीना उनसे कुछ मांग न ले। प्रज्ञान मेरे पास एक उम्मीद है। अगर तुम चाहो तो मैं तैयार हूँ। मेरी सगाई में जो तुमने मुझे अंगूठी पहनाई थी अंतिम उम्मीद मेरे पास बची है। तुम चाहो तो मीना दीदी को यह अंगूठी दे सकते हो। आखिर तुम्हारी खुशी से बढ़कर मेरे लिए अंगूठी नहीं है। .... लेकिन सरला ! तुम्हारे तो सारे आभूषण नौकरी छूटने के बाद घर-चलाने में बिक गए हैं। यह अंतिम निशनी भी मैं...नहीं... नहीं ऐसा नहीं होगा। सरला, मेरी मीना बहुत समझदार है। वह सब कुछ जानती है। मैं सब संभाल लूंगा तुम चिंता मत करो। राखी कोई पैसों का नहीं दिलों और रिश्तों का त्यौहार है। फिर इस दुनिया में समय का मारा सिर्फमैं अकेला प्रज्ञान तोड़े हूँ जो बहन को राखी बांधने के बाद उपहार में कुछ नहीं दे पाएंगे। लाखों हैं लाखों। मीना को बचपन में मिट्टी के खिलौने बेहद पसंद थे। प्रज्ञान गांव के मेले में जाता तो मीना के लिए मिट्टी के खिलौने जरूर लाता। मीना जब शादी के बाद ससुराल जाने लगी तो उसने प्रज्ञान से लिपट कर खूब रोया था। साथ में उन खिलौनो को प्रज्ञान को देते हुए कहा था। भईया, इसे मेरी धरोहर समझना। इसमें मेरा दिल बसता है। यह भाई-बहन के अटूट स्नेह की निशानी है। संभाल कर रखना। इस मिट्टी में मेरे भाई का प्यार बसता है। तुम्हें कसम है भईया इन्हें मिट्टी समझ कर फेंक मत देना। तुम्हें मेरी इस धरोहर को लौटना होगा। यह तुम्हारी बहन की थाती है। प्रज्ञान बहन मीना के उन खिलौनो को 25 साल बाद भी संभाल कर रखा रखा था। आज वह उस नायाब तोहफे को सीने से लगा कर खूब रोया था। लेकिन उसे एक तसल्ली मिली थी कि राखी की बधाई में प्रज्ञान, मीना को उसकी थाती उपहार में देगा। अब उसकी चिंता दूर हो गयी थी। उसके चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट उभर आयी थी।

दूसरे दिन राखी त्यौहार था। बंधन का शुभ मुहूर्त सुबह 8 बजे तक था। लिहाजा मीना समय से पहुंच गयी थीं। मीना अच्छे खासे घर की थीं। उसके पति आईपीएस ऑफिसर हैं। लिहाजा वह अच्छी-खासी गाडी से आयी थीं। उसके साथ नौकर-चाकर भी थे। गाडी से उतरने के बाद मीना सीधे घर में पहुँच गयी। साथ आए नौकर मिठाइयाँ, बच्चों के खिलौने, उपहार और खाने-पीने के सामान अंदर पहुंचा दिए। मीना को देकर बच्चे खुश हो गए। प्रज्ञान को देखते ही मीना गले से लिपट गयी। प्रज्ञान मीना को अपनी जान से भी अधिक मानता था। जब वह नौकरी में था तो उसकी पढ़ाई और शादी में बहुत खर्च किया था। उसे कम्प्यूटर साइंस में इंजीनीर बनाया। उसकी हर मांग और जिद को पूरी करता था। मीना आज एक मल्टीनेशनल कम्पनी में मैंनेजर थी। यह सब प्रज्ञान की वजह से था। प्रज्ञान को वह दिलों जान से प्यार करती है। उसे एक काँटा भी चुभ जाया करता है तो वह तड़प उठती। लेकिन नौकरी छूटने के बाद प्रज्ञान की आर्थिक हालत से वह अच्छी तरह परीचित थी। अरे ! प्रज्ञान दीदी आई हैं, उनका स्वागत करोगे कि खुशी के मौके पर आंसू गिराओगे। सरला ने यह कहते हुए प्रज्ञान और मीना को अलग किया था। प्रज्ञान ने कहा था दीदी मुहूर्त निकल जाएगा, देख मैं तैयार हूँ। मेरी प्यारी बहन तू जल्दी से राखी बाँध मुझे। प्रज्ञान की पत्नी ने राखी और दीप की थाल मीना को देते हुए कहा था लीजिए दीदी जी। मीना, प्रज्ञान का तिलक चंदन और आरती करने के बाद राखी बाँध दिया। अब प्रज्ञान की बारी थी मीना की थाल में उपहार देने की लेकिन प्रज्ञान के हाथ काँपने लगे। उसका गला भर आया। मीना से वह आँखें नहीं मिला पा रहा था। लेकिन, वह मजबूर और बेबस था। न चाहते हुए भी उपहार में बहन मीना को खिलौने की पोटली देते हुए फुट पड़ा। हाथ जोड़ते हुए बोला दीदी ! मेरे इस अमूल्य उपहार को यहाँ मत खोलना। मीना, आँखों से गिरते आंसुओं को पोछते हुए कहा। नहीं भईया ! यह मेरा अधिकार है। मैं तो देखूंगी मेरे लाडले भाई ने राखी में अपनी लाडली को क्या दिया है। प्रज्ञान के सामने ही बहन मीना ने खिलौनों के झोले को खोल दिया। उन खिलौनों को देख मीना नाच उठी। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। वह बचपन के दिनों में खो गई। जैसे उसे जन्नत की खुशियाँ मिल गयीं हों। उन खिलौनों को वह बार-बार चुम रहीं थीं जैसे उसे दुनिया का सबसे श्रेष्ठ उपहार मिल गया हो। वह भाई प्रज्ञान को गले से लगा लिया। बहन की खुशी देख प्रज्ञान की आँखों से आंसुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। वह जाने किस अतीत में खो गया था।